ज्ञानामृत

अप्रैल, 1986
वर्ष 21 ❋ अंक 10

मूल्य 1.50

१-हरिद्वार में 'कुम्भ दर्शन शान्ति मेला' का उद्घाटन दृश्य (बाएं से) दादी चन्द्रमणी जी, स्वामी सत्यमित्रा नन्द जी, भ्राता ए. के. मिश्रा, कुम्भ मेला अधिकारी, ब्र. कु. दादी प्रकाशमणी जी तथा स्वामी प्रकाशानन्द जी

२-शिमला में शिवरात्री पावन पर्व पर ध्वजारोहण के पश्चात् विधायक भ्राता रत्न लाल जी तथा हि. प्र. के राज्य कल्याण मन्त्री भ्राता पीरू राम जी ब्र. कु अरुणा बहिन के साथ।

भूपाल में आयोजित विश्व शान्ति सम्मेलन के अवसर पर ब्र. कु. लयुसयाना म. प्र. के राज्यपाल भ्राता के. एम. चान्डी को संग्रहालय के चित्रों का अवलोकन कराते हुए।

कलकत्ता में शिवरात्रि के महापर्व पर दादी निर्मल शान्ता जी शिवध्वजारोहण करते हुए।

आबू पर्वत : भ्राता एन. सी. शर्मा, सदस्य रेवीन्यु बोर्ड, अजमेर, भ्राता रघुबीर सिंह, महाराजा सिरोही, परिवार सहित 'ओम शान्ति भवन' में दादी प्रकाशमणि जी तथा अन्य ब्र. कु. भाई बहिनों के साथ दिखाई दे रहे हैं।

बम्बई : में महाशिरात्रि तथा स्वर्ण जयन्ति समारोह में अपने उद्गार प्रगट कर रहे हैं प्रसिद्ध फिल्म अभिनेता भ्राता दलीप कुमार जी।

महाशिवरात्रि के अवसर पर इन्दौर में हुए विश्व शान्ति एवं राष्ट्रीय एकता सम्मेलन में नई दिल्ली विश्व सूचना केन्द्र, संयुक्त राष्ट्रसंघ कार्यालय निदेशक माननीय भाई चन्द पटेल जी अपने विचार प्रस्तुत करते हुए

दिल्ली-हरिनगर के नए भवन के उद्घाटन अवसर पर दादी प्रकाशमणि जी दीप प्रज्जवलित करते हुए। उनका साथ दे रही हैं ब्र. कु. शुक्ला तथा ब्र. कु. रुकमणी जी

ट्रिवन्ड्रम में शिवरात्रि के उपलक्ष्य में आयोजित समारोह में केरल राज्य के मन्त्री भ्राता सी. एम. सुन्दरम अपने उद्गार प्रकट कर रहे हैं।

भुज में गुजरात के मुख्यमन्त्री भ्राता अमरसिंह चौधरी को ब्र. कु. रक्षा श्रीलक्ष्मी श्री नारायण का चित्र भेंट करते हुए।

डॉ० रॉबर्ट एलैक्जैंडर कैनेडी रोनसी, आर्कबिशप ऑफ केण्टरबरी को कलकत्ता में ब्र० कु० सुदेश शिव बाबा का चित्र भेंट करते हुए।

Regd No. 10563/65-D(E)-70

आदिपुर सेवा केन्द्र पर शिवरात्रि के शुभ अवसर पर संसद सदस्या उषा बहिन ठक्कर शिव ध्वजारोहण करती हुई

अमृतसर में शिवध्वजारोहण तथा प्रदर्शनी के उद्घाटन के पश्चात ए. डी. सी. अमृतसर तथा प्रसिद्ध सर्जन डा० हरविलास राय जी ब्र. कु. राज तथा आदर्श के साथ खड़े हैं।

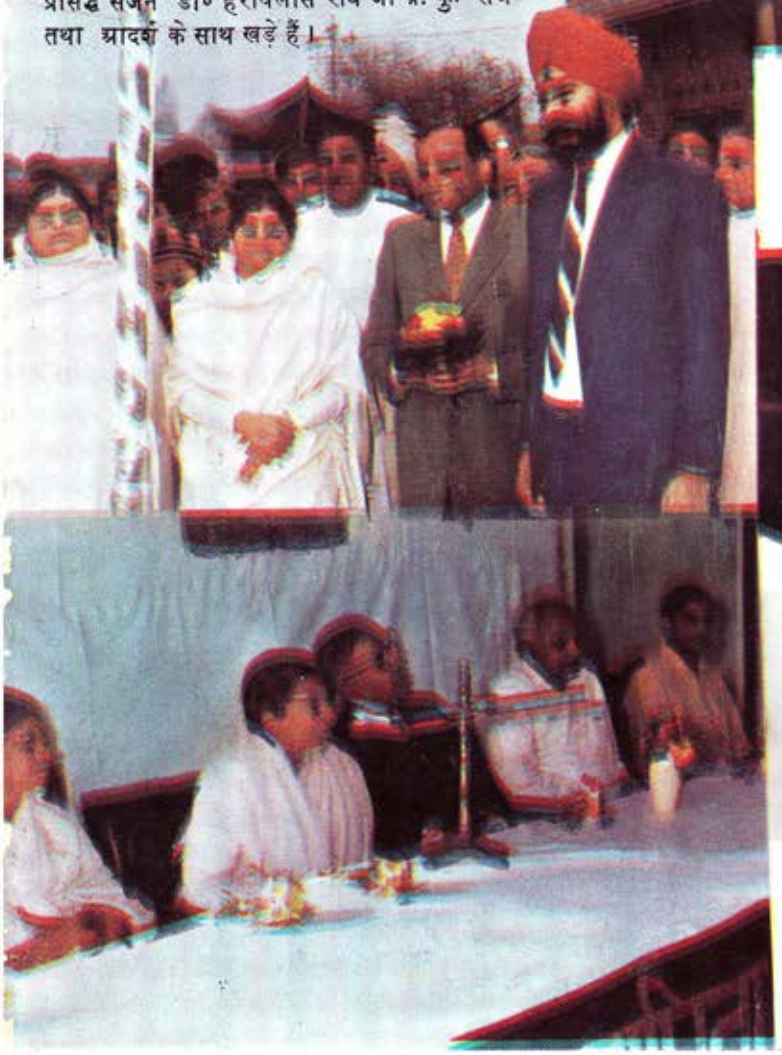

हिसार में हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के उपकुलपति भ्राता एल. डी. कटारिया जी को प्रदर्शनी का अवलोकन कराने के पश्चात् ब्र. कु. रमेश ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए।

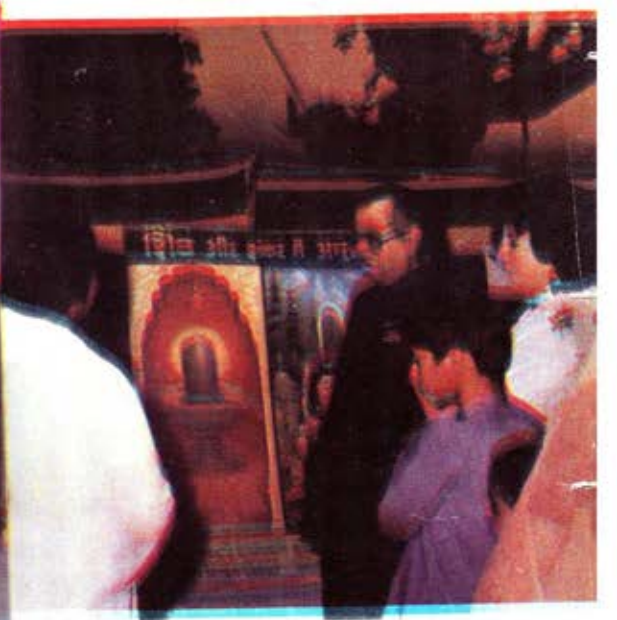

राजापार्क-जयपुर सेवाकेन्द्र पर शिवजयन्ति के उपलक्ष में आयोजित प्रदर्शनी का जस्टिस इसरानी तथा श्रीमति इसरानी अवलोकन कर रहे है। ब्र.कु. प्रेम चित्रों पर समझा रही है।

हैदरपुर-दिल्ली में शिवरात्रि महोत्सव पर आध्यात्मिक कार्यक्रम में (बाएं से) ब्र. कु. सन्तोष, ब्र. कु. राज, भ्राता लालचन्द बत्स, भ्राता आर. एल. गुप्ता तथा हैदरपुर के प्रधान भ्राता भगवान सिंह जी।

अमृत-सूची

क्रम सं०	विषय	पृष्ठ	क्रम सं०	विषय	पृष्ठ
१.	भारत अब शीघ्र पापों से मुक्त होगा	१	१०.	क्षमाशीलता	१३
२.	अठारहवां अध्याय (सम्पादकीय)	२	११.	मन पवित्र तो श्रेष्ठ चरित्र	१५
३.	शिव बाबा का ऊंचा झण्डा	४	१२.	कुछ मीठे संस्करण	१६
४.	"आओ···सम्पूर्णता का सूर्य उदय करें"	५	१३.	हरिद्वार में जाने वालों को	१९
५.	'बाबा' (कविता)	७	१४.	छोड़ो तो छूटो	२०
६.	सचित्र आध्यात्मिक समाचार	८	१५.	प्रायश्चित	२१
७.	क्या शाकाहार में भी हिंसा है ?	९	१६.	आध्यात्मिक समाचार (चित्रों में)	२५
८.	बदल गई दुनिया मेरी	११	१७.	आध्यात्मिक सेवा समाचार	२९
९.	समर्पण	१२			

भारत अब शीघ्र पापों से मुक्त होगा

—दादी प्रकाश मणि

हरिद्वार में कुम्भ दर्शन शान्ति मेला—हरिद्वार के नील-धारा के खुले मैदान में निर्मित विशाल 'कुम्भ दर्शन शान्ति मेले' का उद्घाटन मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी ने किया। इस अवसर पर उत्तरीय क्षेत्र की प्रशासिका दादी चन्द्रमणि जी, मुख्य अतिथि माननीय स्वामी सत्यामित्रानन्द गिरी जी, निवर्तमान शंकराचार्य एवं संस्थापक भारत माता मन्दिर, आचार्य महामण्डलेश्वर स्वामी प्रकाशानन्द जी, संस्थापक जगदगुरु आश्रम तथा कुम्भ मेला अधिकारी अरुण कुमार मिश्रा जी भी उपस्थित थे। इस मेले में आत्मदर्शन मण्डप, परमात्मा दर्शन मण्डप, राजयोग मण्डप तथा वैकुण्ठ मण्डप में विभिन्न चित्र तथा माडल सजाये गये हैं। तथा मेले के प्रांगण में ४५ फुट ऊंचा शान्ति स्तम्भ कुम्भ मेले में आने वाले लाखों श्रद्धालुओं को शान्ति-पथ-प्रदर्शन का कार्य कर रहा है। इस अवसर पर आयोजित राजयोग शिविरों में भाग लेकर असंख्य नर-नारी अपने जीवन को दिव्य बनाने की प्रेरणा भी लेते रहते हैं।

मेले को देखने के पश्चात् आचार्य महामण्डलेश्वर स्वामी प्रकाशानन्द जी ने कहा कि इस मेले में प्रदर्शित विभिन्न चित्रों से समस्त वेदान्त, समस्त दर्शन तथा समस्त वेदों की परम्पराओं का समन्वय नजर आता है। मैं दादी प्रकाशमणि जी को धन्यवाद देता हूं जिन्होंने हरिद्वार में कुम्भ के अवसर पर इतना विशाल कैम्प लगाया है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह ईश्वरीय विश्व विद्यालय भारतीय संस्कृति, हिन्दू संस्कृति और परम्परा तथा भारत के गुरुत्व का विश्व में संदेश वाहक बनेगा।

कुम्भ मेला अधिकारी श्री अरुणकुमार मिश्र जी ने कहा कि यह कुम्भ उन्हें साधु सन्तों की गोष्ठी समान लगता है। कुम्भ सन्त और उन गृहस्थियों का समागम भी है जिनमें संत बनने की भावना अभी भी कुछ बची है। गंगा स्नान तो एक बहाना है। मुझे विश्वास है कि विशाल शान्ति मेला में आकर प्रत्येक नर-नारी कुछ न कुछ लेकर ही जाएगा। उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि स्वामी सत्यमित्रानन्द जी ने अपने ओजस्वी भाषण में कहा कि कुम्भ मेले के मध्य में इस शान्ति मेले में आकर लाखों यात्री अपने मन की बात प्राप्त करेंगे और उनका चरित्र एक नई दिशा प्राप्त करके विभिन्न समस्याओं का सहज समाधान प्राप्त कर सकेगा।

राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी ने अपने अध्यक्षीय प्रवचन में कहा कि मुझे यह संकल्प सदा रहता है कि वह दिन कब आएगा जब हर मानव अपने पाप कर्मों से मुक्त हो सच्चे हरि के द्वार चलेगा। मुझे विश्वास है कि वह दिन अब दूर नहीं जब यह भारत पापों से मुक्त धरणी बनेगी। प्यारे बाबा ने कहा था एक दिन आएगा जब आप माताओं के साथ स्वामी महन्त भाई बहन के सम्बन्ध में आकर और मिलकर भारत को पावन बनाने का कार्य करेंगे। मैं देख रही हूं वह समय आ गया है। आइए, हम सब मिलकर

(शेष पृष्ठ ३ पर)

सम्पादकीय

अठारहवां अध्याय

एक अव्यक्त वाणी में शिव बाबा ने कहा है कि १७ वां अध्याय समाप्त हो चला है और १८वें अध्याय का प्रारम्भ हो रहा है। साथ ही बाबा ने यह महत्त्वपूर्ण बात भी कही है कि इस विशेष वर्ष में पुरुषार्थ करने वालों को अतिरिक्त अंक (extra marks) प्राप्त हो सकते हैं। बाबा के ये महावाक्य पुरुषार्थी जीवन के लिए विशेष ध्यान देने के योग्य और विशेष लाभ लेने के निमित्त हैं।

इस विषय में सबसे पहले तो इस बात का निश्चय होने की जरूरत है कि सचमुच ही यह वर्ष विशेष महत्त्व को लिए हुए है। इस बात में यदि निश्चय का अभाव होगा तो उसमें अलबेलापन, आलस्य और पुरुषार्थ में ढीलापन बना रहेगा। परन्तु निश्चय के लिए यह जानना जरूरी है कि यह किन कारणों से महत्त्वपूर्ण होगा। हो सकता है कि कोई अपने मन में यही मान ले कि यह तो पुरुषार्थ को तीव्र कराने के लिए बाबा की एक युक्ति-मात्र है वर्ना तो यह वर्ष भी अन्य वर्षों ही की तरह होगा। वास्तव में ऐसा सोचना एक सूक्ष्म रूप से संशय के मार्ग पर पग लेना होगा। क्योंकि यदि यह वर्ष विशेष नहीं भी होगा और बाबा का यह कथन एक युक्ति-मात्र ही है तो भी उस कल्याणकारी परमपिता की बताई हुई युक्ति द्वारा हमें अपनी कमियों से मुक्ति मिलेगी। और, यदि गहराई से देखा जाये तो यह वर्ष कई कारणों से विशेष वर्ष हो सकता है और हमारे ठीक पुरुषार्थ के फलस्वरूप हमें अतिरिक्त अंक दिलाने का निमित्त बन सकता है।

अतिरिक्त अंक कैसे ?

अच्छा होगा कि पहले हम अतिरिक्त अंक की बात को समझ लें। सन् १९५१-५२ में जब इस ईश्वरीय सेवा का कार्य ईश्वरीय विश्व-विद्यालय के प्रांगण से बाहर प्रारम्भ हुआ था, तब की स्थिति पर कुछ विचार कर लेना इस विषय में सहायक सिद्ध होगा। जिन्होंने इस सेवा में पहल की थी, उनको उस समय कितनी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा होगा! उसके बाद भी ईश्वरीय सेवा के क्षेत्र में जो तत्पर हुए, उन्हें कितना विरोध सहन करना पड़ा। उन परिस्थितियों में जिन्होंने मंच से यह ज्ञान सुनाया होगा, उनके मन में कितना साहस, निश्चय की पराकाष्ठा और आत्म-विश्वास से काम लेना पड़ा होगा। जब इस ईश्वरीय विश्व-विद्यालय में आने वालों की संख्या बहुत कम थी और आने वाले भी प्रायः साधारण लोग ही थे, जब यह ज्ञान भी अभी विस्तार पूर्वक स्पष्ट नहीं हुआ था, जब इस संस्था की आर्थिक स्थिति और मान-प्रतिष्ठा भी अभी नगण्य थी और सेवा के साधन भी अत्यन्त अल्प थे तथा अभ्यास भी अभी परिपक्व नहीं था, तब जिन्होंने लोक-लाज खोकर, जनता की कड़ी आलोचना सुनते हुए, निर्भय होकर सत्य को सत्य कहा और ऐसा कहने के परिणामों की चिन्ता नहीं की, अवश्य ही उनको अतिरिक्त अंक मिले होंगे। जब संख्या कम थी, तब हर व्यक्ति के थोड़े-से शारीरिक सहयोग का भी बहुत महत्त्व रहा होगा। आर्थिक कठिनाई के उस जमाने में थोड़ा-सा आर्थिक सहयोग देने वाले व्यक्ति का पुरुषार्थ 'विशेष पुरुषार्थ' ही गिना जाएगा। इन बातों को देखकर हमें यह मानना होगा कि हर समय की अपनी विशेषता होती है और जो विशेषता उस समय की थी वह बाद के समय की नहीं थी।

पुनश्च, हम यह भी देखते हैं कि पहले थोड़े-से बहन-भाई थे; तब उन्हें बाप-दादा की निकटता और व्यक्तिगत मार्ग प्रदर्शना पर्याप्त मात्रा में प्राप्त होती थी। जैसे-जैसे संख्या बढ़ती जाती है, वह व्यक्तिगत मिलन की रीति अल्प समय ही चल पाती है। अतः अब जिस गति से ईश्वरीय सेवा में वृद्धि हो रही है, उसके अनुसार भी दिनोंदिन संख्या बढ़ने से व्यक्तिगत मुलाकात का अवसर और समय कम ही प्राप्त होगा।

इन सभी बातों को सामने रखते हुए हमें यह समझना चाहिये कि हम इस वर्ष विशेष पुरुषार्थ करके अपनी स्थिति को अचल बना लें और ईश्वरीय सेवा के क्षेत्र में पूरी तरह लगकर अपना भविष्य ऊँचा बना लें तथा अतिरिक्त अंक ले लें।

आगे चलकर धन का मूल्य अत्यन्त अल्प होगा। अब भी भारत सरकार के अपने ही वक्तव्य के अनुसार रुपये का मूल्य शायद १२ पैसे रह गया है। अत: अब यदि कोई एक रुपया भी ईश्वरीय सेवा में लगायेगा तो उसका रुपया न होकर पहले की तुलना में दस-बारह पैसे ही होगा।

आगे चलकर तन से, वाणी से, धन से, कर्म से सहयोग देने वाले बहुत हो जायेंगे। वे सेवा के लिये अपने स्थान और साधन देने की इच्छा प्रगट करेंगे। परन्तु तब तो इतने साधन होंगे कि इतनी आवश्यकता ही नहीं रहेगी। अत: ऊँचा भाग्य बनाने का अवसर ही अल्पतम होगा।

फिर हम देखते हैं कि परिस्थितियाँ भी शीघ्र ही बदलती जा रही हैं। अब पंजाब में पिछले तीन वर्षों में जो स्थिति हो गयी है, उसमें तो एक साधारण व्यक्ति के लिये मन को ईश्वरीय स्मृति में स्थिर करना ही दिनोंदिन कठिन होता जा रहा है। कई स्थानों पर तो प्रतिदिन प्रात: क्लास में आना भी कठिन हो गया है। कई नगरों में तो कर्फ्यु (Curfew) ही लगा रहता है और तनाव ही की स्थिति बनी रहती है। जिन्होंने योग सीख लिया है और जिनका अभ्यास कुछ परिपक्व है, वे ही मन स्थिर कर सकते हैं।

अत: जो इस वर्ष अपनी अवस्था महान एव अचल बना लेंगे उनका भविष्य ऊँचा होगा ही। मनसा सेवा भी वे ही कर सकेगा। जिनकी अपनी अवस्था अचल नहीं होगी, वे और लोगों की सेवा कैसे कर सकेंगे? और दूसरी प्रकार से तो सेवा थोड़े समय के बाद कम ही होती जायेगी।

अत: इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए हमें इस वर्ष विशेष पुरुषार्थ करके अतिरिक्त अंक लेने का पूरा पुरुषार्थ करना चाहिये। सन् १९६९ तक ईश्वरीय ज्ञान, योग आदि अध्ययन-विषयों के सभी सिद्धान्तों का परिचय तो स्पष्ट एवं सविस्तार रीति से मिल ही चुका था। तब और उसके बाद अपनी स्थिति को अव्यक्त, फरिश्तों-जैसे अथवा महान् बनाने के लिये भी अब तक सभी सूक्ष्म युक्तियाँ लगभग बताई ही जा चुकी हैं। इस प्रकार सतरह अध्याय तो गोया पूरे हो ही चुके हैं। अब तो हमें पूर्णत: नष्टोमोह: स्मृतिर्लब्धा और गतसंदेह: बनकर अपनी धारणाओं को उच्च तथा स्थिति को परिपक्व बना लेना चाहिये।

—जगदीश

भारत अब शीघ्र पापों से मुक्त होगा

(शेष पृष्ठ १ का)

पवित्रता का सूत्र बाँधें तो यह विश्व पुन: पावन बन जाएगा।

कुम्भ दर्शन शान्ति मेला रोड़ी बेल-बेला के सामने चण्डी द्वीप (नीलधारा) में लगाया गया है। ६०,००० वर्ग फीट क्षेत्र में फैला हुआ यह भव्य मेला हर यात्री को स्वत: आकर्षित कर रहा है। सुन्दर चित्र आकर्षक माडल तथा भव्य साज सजावट के बीचोंबीच ४५ फुट ऊंचा टावर आध्यात्मिक रहस्य को स्पष्ट कर रहा है। प्यारे बाबा के असंख्य झण्डे लहरा रहे हैं। इसी भव्य पण्डाल में ही भोजन तथा आवास निवास की भी समुचित व्यवस्था के लिए शिविर काटेज तथा ई० पी० टैण्ट लगाए गए हैं। मेले के मुख्य द्वार में प्रवेश होते ही भव्य चित्र प्रदर्शनी के साथ-साथ रूहानी सेना के कैम्प अति मनोरम लगते हैं। मेले की सूचना जन-जन तक पहुंचाने के लिए तथा कुम्भ यात्रियों को ईश्वरीय सन्देश देने हेतु लाखों की संख्या में फोल्डर छपवाकर बांटे गए हैं।

शिव बाबा का ऊंचा झण्डा

ब्र० कु० सूरज प्रकाश, सहारनपुर

तन रोमांचित, मन पुलकित रोम-रोम हर्षाता है।
जब शिव बाबा का झण्डा ऊँचा लहर-लहर लहराता है।।

सब धर्मों की सर्व आत्माएँ करती जिसका गुणगान हैं
महिमा जिसकी गाते गीता, बाईबल, वेद, कुरान हैं
नमन करे सब इस झण्डे को, सारे जग की शान है
इस पावन झण्डे पर अपना तन-मन-धन कुर्बान है
देख के इस झण्डे को हर कोई नतमस्तक हो जाता है
शिव बाबा का झण्डा ऊँचा लहर-लहर लहराता है

कलुषित आसुरी शक्तियों का संहार करेगा ये झण्डा
सारे जग की डूबी नैया पार करेगा ये झण्डा
हाहाकार मिटाके जय-जयकार करेगा ये झण्डा
स्वर्णिम दुनिया लाने का चमत्कार करेगा ये झण्डा
मुक्ति-जीवनमुक्ति की सबको राह दिखाता है
शिव बाबा का झण्डा ऊँचा लहर-लहर लहराता है

शरण में झण्डे की जो आये, हल मिलता हर मुश्किल का
जीवन की बगिया महक उठे, मुर्झाया फूल खिले दिल का
राह शूल भरी अनुकूल बने और सहज मिले अपनी मंजिल
जीवन भर की सारी खुशियाँ पल में हो जातीं हासिल
अन्तरमन आलोकित करके सबकी ज्योति जगाता है
शिव बाबा का झण्डा ऊँचा लहर-लहर लहराता है

इस झण्डे की छत्र-छाया में होता जग कल्याण है
ज्योर्तिबिन्दु का ये झण्डा सारे जग से महान है
जान लिया और मान लिया जिनको इसकी पहचान है
वो इस पर न्योछावर करते अपना दिल और जान है
रोम-रोम दिन रात उसी की हर पल महिमा गाता है
शिव बाबा का झण्डा ऊँचा लहर-लहर लहराता है

आओ सर्व धर्म की आत्माओं आज दृढ़ संकल्प लें
पाँच विकारों से जग को मुक्त कराकर दम लेंगे
तोड़ के धर्मों की दीवारें विश्व एकता लायेंगे
अखिल विश्व में ज्योति-बिन्दु का यह झण्डा फहरायेंगे
दुनिया सारी, जाए बलिहारी सबका भाग्य विधाता है
शिव बाबा का झण्डा ऊँचा लहर-लहर लहराता है

"आओ... सम्पूर्णता का सूर्य उदय करें"

ब्र.कु. सूरज कुमार, माउण्ट आबू

जब सम्पूर्ण विश्व पर दुख, अशांति और गमों के काले बादल मंडरायेंगे, तब सबके मन के अन्धकार को कौन दूर करेगा... हमारी सम्पूर्णता का प्रकाश ही जग के तिमिर को हटायेगा । सबकी तो यही मान्यता है कि एक परमात्मा ही सम्पूर्ण है, परन्तु अब उस परमात्मा ने हमें भी सम्पूर्ण बनने के लिए आह्वान किया है । विचारणीय है कि जब कलियुग की इस कालिमा में, अनेक सम्पूर्णता के सूर्य अपना प्रकाश फैलायेंगे, तो इसका अन्धकार कितना समय अपने पैर जमा पायेगा । उस दिव्य प्रकाश के समक्ष माया का यह भयावह अन्धेरा पल भर में नष्ट हुआ प्रतीत होगा ।

कितने गर्व की बात है, भगवान् ने अंतिम बार चुनौती दी है कि "**सम्पन्न और सम्पूर्ण बनने का ये अंतिम वर्ष है । ये वरदानी वर्ष है । इसमें जो प्राप्ति करना चाहो, सहज ही कर सकते हो ।**" अब साक्षी होकर देखें कि कौन इस वरदानी समय का और ईश्वरीय सहयोग का पूर्ण लाभ उठाते हैं । और कौन इस समय को भी पूर्ववत् ही समाप्त कर देते हैं ? कितनी विशाल बुद्धि होगी उन मनुष्यों की जो इस समय अपनी सम्पूर्ण शक्तियां लगाकर, अपने मन को चारों ओर से समेटकर, एकाग्रचित्त होकर ईश्वरीय चुनौती को स्वीकार करेंगे ।

इस वर्ष के बाद जबकि इस दिव्य कार्य के 50 वर्ष पूर्ण हो चुके होंगे, सत्य गीता के 18 अध्यायों का ज्ञान भी पूरा हो चुका होगा, फिर तो प्रारम्भ होगा, महाभारत युद्ध... एक ओर जय जयकार और दूसरी ओर भयानक हाहाकार... । एक ओर स्नेह, शांति व सुख की एक-एक बूंद की प्यास और दूसरी ओर इन खज़ानों से युक्त आत्माएं । एक ओर शंकर का ताण्डव नृत्य व दूसरी ओर स्वर्णिम युग के स्वर्णिम सूर्य का उदय ।

परन्तु वो समय स्वयं के अभ्यास का नहीं होगा । परिस्थिति और समस्याएं, चारों ओर कराहती हुई आत्माओं के वाइब्रेशन्स, विकारों का अंतिम प्रकोप, ईश्वरीय मिलन का आनंद नहीं लेने देंगे । तब तो काम आयेगी, वर्तमान में जमा की हुई पूंजी । इसलिए इस वर्तमान काल को साधारण न समझ, वैसा ही समझना चाहिए जैसे पढ़ाई में परीक्षा से पूर्व का कुछ समय तैयारी का होता है । और वे विद्यार्थी भी जो कि पूरा वर्ष लापरवाह रहते हैं, उस समय तैयारी में लग जाते हैं । परन्तु जिन्होंने प्रारम्भ से ही पढ़ाई पर पूरा ध्यान दिया होता है, उनके लिए वो समय आनंद का होता है । वे अपनी योग्यताएं दिखाने के लिए उत्सुक रहते हैं, वे परीक्षाओं का आहवान करते रहते हैं । वो ऐसा ही है ये पुरुषार्थ का अंतिम 1986 का वर्ष... ।

इस वर्ष को ईश्वरीय वरदान है अर्थात् सहज सफलता का वरदान । अर्थात् यदि कोई पुरुषार्थी, दृढ़ संकल्प धारी बनकर सतत् तीव्रता-से पुरुषार्थ में लगेंगे, तो उसे प्रतिदिन अनेक नये-नये अनुभव होंगे । वे स्वयं में अनेक वरदानों का आहवान कर सकेंगे और उन्हें मंजिल समीप अनुभव होगी । जो कुछ आजतक कठिन था, वो सरल लगेगा, जो संस्कार नहीं बदलते थे, वे सहज ही बदल जाएंगे, जिन्हें अपनी कमियों का एहसास नहीं था, उन्हें एहसास होगा और वे अपनी कमियों को निकालकर सम्पन्न बन सकेंगे ।

तो आओ हम विचार करें कि कैसे इस वर्ष सम्पूर्णता का आह्वान करें । और एक बार फिर बीसों नाखूनों का ज़ोर लगा दें, अपनी सम्पूर्ण शक्ति लगा दें, जो कर सकते हैं, वो कर लें, ताकि अंत में हमारे मन में ये अरमान न रह जाएं कि ओह...भगवान् ने तो पूर्ण सहयोग दिया, हम कर सकते थे, परन्तु हमने किया नहीं । तो यहां प्रस्तुत है कुछ वे ठोस धारणाएं जिन्हें अपनाने से हम अपने लक्ष्य को पा लेंगे ।

हम कह सकते हैं कि सम्पूर्णता को पाने के लिए हम अपनी संकल्प शक्ति को एकाग्र करें । मन में, आंख खुलने से ही अनेक संकल्प धारणाएं फूटती हैं । और वे शीघ्र ही इतनी तीव्र हो जाती हैं कि उन्हें रोकना वायुवेग को रोकने के समान हो जाता है । और फिर आत्मा उन धाराओं में ही बहने लगती है । इन धाराओं के द्वार को जानकर उन्हें बंद करने से सहज ही संकल्प शक्ति को केंद्रित किया जा सकता है । और तब यह केंद्रित शक्ति हमारे लिए सबसे बड़ा बल होगा जो हमें सम्पूर्णता की ओर ले चलेगा ।

बेहद की दृष्टि धारण करें

सम्पूर्णता का प्रकाश, सूर्य के प्रकाश की तरह असीम है, तब भला हद की दृष्टि वाले सम्पूर्णता को कैसे पा सकेंगे । हद के भाव, हद की दृष्टि तो मानो सम्पूर्णता के सूर्य के समक्ष बादल समान हैं, जो उसके प्रकाश को सम्पूर्ण सृष्टि पर नहीं फैलने देते । अतः छोटे विचार, सीमित दृष्टिकोण, हद की दीवारों में अटकाव, हद की जिम्मेदारियों में लगाव—अब ये हद की दृष्टि समाप्त करके, "ये विश्व ही हमारा है, हम सभी के दाता हैं"—ये विशाल भाव धारण करने से, सीमित दृष्टिकोणों में नष्ट होनेवाली हमारी शक्तियां बचेंगी और हम अपने लक्ष्य की

ओर चलेंगे ।

सम्पूर्ण पवित्रता द्वारा सुनहरी शक्तियों की किरणें फैलायें—

व्यर्थ संकल्प, कर्म व बोल से मुक्ति के बाद जब मन शीतलता के सागर में डूबने लगता है, तब उसे साधारण संकल्पों से भी ऊपर उठकर, श्रेष्ठ संकल्पों के द्वारा अपनी पवित्रता को शक्तिशाली बनाना होता है । अत: इस वर्ष व्यर्थ व साधारण संकल्पों से मुक्त होकर अपनी शक्तिशाली पावन दृष्टि द्वारा कमजोर आत्माओं को बल देने का बल भरना है । युद्ध और मेहनत तो बहुत की, अब स्मृति स्वरूप होकर अपने तेजस्वी मस्तक पर पवित्रता का अविनाशी तिलक लगाना है ।

सम्पूर्ण नष्टो मोहा बनें—

प्रत्येक आत्मा किसी-न-किसी प्रकार की मोह ममता में ग्रस्त है । प्रथम कार्य है—उस मोह को पहचानना और फिर ये महसूस करना कि दुख, चिंता और उदासी इस मोह का ही लक्षण है । और मुख्य बात जिनसे हमें मोह है, इस मोह के कारण, हम उनके लिए वह सहयोग नहीं कर सकते, जो हम करना चाहते हैं । निर्मोही पन की शक्ति द्वारा ही हम दूसरों की सच्ची मदद कर सकते हैं, अन्यथा हमारी सम्पूर्ण शक्ति केवल मोह में ही नष्ट हो जाती है । मोह हमारी शक्तियों का क्षय द्वार है, सम्पूर्णता में बाधक है, मन पर छाया सूक्ष्म बोझ है ।

इसलिए जबकि हमें ज्ञात है कि अब हमें सब-कुछ छोड़ना ही होगा तो क्यों न हम स्व इच्छा से छोड़ दें, ताकि मन आनंदित हो और दुख व चिंताओं से मुक्त हो । अन्यथा जब हमसे जबर्दस्ती छुड़ाया जायेगा, तब हमारे दुखों की सीमा नहीं होगी । इसलिए यदि विनाशी वस्तुओं के विनाश होने से पूर्व ही हम उनमें विनाशी भाव धारण कर साक्षी हो चुके होंगे तो हमारा अन्त अति सुहाना होगा और विनाश के विकराल काल में हम आत्माओं को शांति दे सकेंगे ।

डबल लाइट बनें—

सबका बोझ हरनेवाले प्रभु के बच्चे भी यदि किसी बोझ से दबे हों, तो प्रभु के लिए भी लज्जाजनक है । जबकि करन करावन हार स्वयं ही अपनी शक्तियों से सब-कुछ करा रहा है तो हम बोझिल क्यों ! हमें पता है कि हमारे न करने पर भी कोई कार्य रुकेगा नहीं, फिर हम बोझ से क्यों दबे हैं !

तो आओ अपना सम्पूर्ण बोझ ज्ञान सागर में फेंककर लाइट होकर उड़ें । फ़रिश्ता बनें... हमारा सरल चित्त, हमारी संकल्प शक्ति को बचायेगा । परन्तु यदि हम कहीं भी भारी होंगे तो सारी योग-शक्ति उसी में व्यय हो जाएगी । इसलिए शक्तिशाली ज्ञान द्वारा किसी भी भारी पन को समाप्त करते चलें । ज्ञान-स्वरूप आत्मा ही डबल लाइट होकर रह सकती है ।

विशाल दिल बनें, छोटी-छोटी बातों में उलझें नहीं—

ब्रह्मा समान सम्पूर्ण बनने के लिए उन्हीं की तरह विशाल दिल बनें और एक बाप की तरह ही सब-कुछ समान भी सीखें । छोटे दिलवाले कदम-कदम पर परेशानी महसूस करते हैं । वे ही प्रति पल चिंतित होकर यत्र-तत्र स्वयं को उलझाते रहते हैं । अब जबकि समस्त विश्व उलझा हुआ है, उन्हें उलझनों से छुड़ाने के लिए पहले हमें मुक्त होना होगा । इसलिए सम्पूर्णता के अभिलाषियों को चाहिए कि अब कहीं भी स्वयं को उलझायें नहीं और जो कुछ भी देखते या सुनते हैं उसे समाकर चलें तो शीघ्र ही बाप समान सम्पन्न बन जाएंगे ।

त्याग और तपस्या का बल भरें—

त्याग और तपस्या का बल मनुष्य को निर्भय बनाता है । इनका अभाव अनेक अभाव अनुभव कराता है । अत: मन में जान लें कि यह एक वर्ष त्याग और तपस्या का है । सुना है कि ऋषियों ने भगवान् को पाने के लिए वर्षों तक एक टांग पर खड़े होकर तप किया था, तो क्या हम भगवान् से अनेक वरदान पाने के लिए इस एक वर्ष में भी यह सहज तपस्या नहीं करेंगे ! जबकि हमारे ऊपर तो भगवान् के आशीर्वाद का हाथ पहले ही है ।

तो आओ, एक वर्ष के लिए तपस्वी बनें । अन्य सभी शौक छोड़ दें, अन्य सभी इच्छाएं त्याग दें । जन्म-जन्म सर्व प्राप्तियां परछाई की तरह हमारे साथ होंगी । अब सब-कुछ त्यागकर, स्वयं में यह सुखद बल भर लें । तब यह बल विशाल ईश्वरीय सेवाओं में चमत्कारिक कार्य करेगा । यही बल हमें निर्भय बनाकर विनाशकाल में आनंद अनुभव करने का फल प्रदान करेगा । और यही बल उस समय निर्बल आत्माओं का बल होगा ।

बेहद की स्नेही व सहयोगी वृत्ति धारण करें—

ईश्वर के प्रति तो हमारा अटूट स्नेह व सहयोग है ही परन्तु बाप से प्यार है तो उसकी रचना से कितना स्नेह है ? बीज के लिए सहयोग तो सर्व पत्तों के लिए क्या भावना है ? यह स्नेह व सहयोगी भावना भी सर्व के लिए हो । सबके प्रति बसी मन की शुभ-भावना ही हमें अनेक दुर्गुणों से मुक्त कर लक्ष्य की ओर ले चलती है । दूसरों के प्रति श्रेष्ठ भावनाएं धारण करने में तो कुछ

भी खर्च नहीं है, फिर क्यों न हम यह बिना खर्च का परमानन्द ले लें । तो आओ, इस वर्ष मन को निर्मल कर दें, खुद भी आगे बढ़ें और दूसरों को भी बढ़ायें ।

योग को अपना स्वभाव बनायें—

ईश्वरीय महावाक्य हैं—''ब्राह्मण-जीवन की नेचर है योग युक्त रहना ।'' यही हमारा अनुभव हो । जो आत्माएं इस वर्ष सम्पन्नता के समीप पहुंचने की इच्छुक हों, उन्हें चाहिए कि इस वर्ष योग की भट्ठी जलाएं—अपना योग प्रतिदिन 8 घंटे कर दें । जो इस अभ्यास में सफल होंगे, वही ईश्वरीय कामनाओं के अनुरूप सम्पूर्णता के दिव्य पथ पर कदम रख सकेंगे, अन्यथा सम्पूर्णता मृग तृष्णा समान बनकर ही रह जाएगी । और उस समय सर्व को प्रकाशित करने के बजाय स्वयं को ही प्रकाशित करने की प्यास रह जाएगी ।

इसलिए जिन्हें कुछ करने का इरादा है, जिनका मनोबल इतना बढ़ा-चढ़ा है कि हम भगवान् की कामनाओं को पूर्ण करके ही दिखायेंगे... हम इस विश्व को आलोकित करके ही छोड़ेंगे, उन्हें 8 घंटे योग से स्वयं को बलशाली बनाना चाहिए । इसके लिए दिन में कई बार 5-5 मिनट बैठकर एकाग्रता करनी चाहिए, सवेरे व शाम विशेषरूप से योग-अभ्यास करना चाहिए और प्रतिमास अपने योग-चार्ट को एक घंटा बढ़ाना चाहिए ।

कमियां निकालो और कमाल देखो—

ईश्वरीय महावाक्य है—''बाप की छत्रछाया में रहो और कमाल देखो ।'' बाप की शीतल छाया में कौन रहेंगे ? जिनका अन्तर्मन शीतल होगा । अपनी कमियों को जानकर ज्ञान-योग की मदद से उन्हें निकालकर जितना सहनशक्ति धारण करने का शुभ-संकल्प होगा, उतना ही सहज सफलता होगी । इस वर्ष विशेषरूप से प्रत्येक गुण व शक्ति की गहराई में चलें । उनका चिंतन करके उनका स्वरूप धारण करने का संकल्प करें । चिंतन ही स्वरूप बनायेगा । तब विश्व हमारा दिव्य स्वरूप देख सकेगा और हमारी दिव्यता के प्रकाश में परमपिता को पहचान सकेगा, अन्यथा हमारे दुर्गुणों का अन्धकार, उन्हें उस परम-ज्योति से भी दूर ले जायेगा ।

इस प्रकार यदि हम इन सब बातों से ऊपर उठकर तीव्र पुरुषार्थ में लगेंगे तो कोई भी समस्या हमारे समक्ष खड़ी नहीं रहेगी, बल्कि प्रत्येक समस्या हमारा मार्ग स्पष्ट करेगी । भगवान् स्वयं हमें साथ दे रहा है, हमें अपनी छत्रछाया में छुपाए हुए है, हमें अपने हस्तों पर उठाए हुए है । और कितने गौरव की बात है कि सबकी मनोकामनाएं पूर्ण करनेवाले ने हमसे श्रेष्ठ कामनाएं की हैं... और उसी की श्रेष्ठ शुभ-भावनाएं हमारे साथ हैं, उनकी शुभ-भावनाओं से हमारी सर्व श्रेष्ठ कामनाएं पूर्ण होंगी ही । और जो भगवान् की इच्छा पूर्ण करेंगे, उन्हें न जाने क्या-क्या प्राप्त होगा ?

तो हे समझदार रूहो, आओ इस स्वर्णिम अवसर का पूरा लाभ उठायें... मन को ईश्वरीय प्राप्तियों से पूर्ण सन्तुष्ट कर दें... अब न कहीं देखें, न कहीं उलझें, न कहीं टकरायें । और फ़रिश्ता बनकर संसार की रक्षा करें, निर्बलों को सहारा दें, डूबतों को किनारा दें । हम याद रक्खें कि यह सम्पूर्ण बनने के लिए अंतिम वर्ष है, हम पूरा ज़ोर लगा दें और प्रति पल हमारे कानों में भगवान् की यह आवाज़ गूंजती रहे...

''बच्चों, तुम्हारी सम्पूर्णता हाथ में विजयमाला लेकर तुम्हारा आह्वान कर रही है ।'' □

'बाबा'

बाबा बाबा कहत ही, रोम रोम खिल जाय।
सुख उप जै शक्ति भरै, प्रेम लहर लहराय।।
बाबा हिय में राखिये, नहीं जाय पल भूल।
सिद्ध काज **सब** होयेंगे, नहीं विघ्नों के शूल।।
अति मीठो **बाबा** मेरो, सर्व सुखन को सार।
अतीन्द्रिय **सुख दाता**, मम जीवन आधार।।
रोम रोम **बाबा बसै**, तनिक न होवै दूर।।
पीउ पीउ कह नाचत, मम-मन मुदित मयूर।।
बाबा अंग संग राखिये, होय न पल भर दूर।।
बाबा तज, चिन्तय पर, उन वत्सन पर धूर।
क्षण में दिल ने माना, ''मेरा बाबा'' बोल।।
अखुट खजाने खुल गये, सौदा हुआ अनमोल।
भोले का भगवान तू, यद्यपि चतुर सुजान।।
चतुराई भावै नहीं, पसन्द किये अनजान।
नहीं मेहनत, नहीं मोल कछु, नहीं समय कछु हीन्ह।।
इकिकस जन्म प्रारब्ध की, गारन्टी प्रभु कीन्ह।।

ब्र.कु. राजकुमार मीतल.. दिल्ली

हरिनगर-दिल्ली में नवनिर्मित भवन का चित्र।

गोकाक में शिवरात्रि कार्यक्रम में विधायक भ्राता आर० एम० पटेल माऊंट आबू का अपना अनुभव सुना रहे हैं।

भावनगर सेवाकेन्द्र द्वारा शिवजयन्ती पर्व पर २३ कार्यक्रम किए गए। सुभाष नगर विस्तार के कार्यक्रम की एक झलक।

गोरेगांव-बम्बई में महाशिवरात्रि के अवसर पर एक सर्व धर्म सम्मेलन रखा गया। स्वामी मुमक्षानन्द, अध्यक्ष राम-कृष्ण मिशन अपने विचार व्यक्त कर रहे हैं।

मण्डी आदमपुर में हुए शिवरात्रि कार्यक्रम में मंच पर डॉ० वर्मा जी, सेठ चिरंजीलाल जी, ब्र० कु० रमेश तथा सुदेश तथा ब्र० कु० रामप्रकाश जी विराजमान हैं।

बिलासपुर सेवाकेन्द्र द्वारा मुंगेली में आयोजित गीता ज्ञान राजयोग चित्र प्रदर्शनी के उद्घाटन अवसर पर सम्बोधित करती हुई ब्र० कु० गीता जी।

क्या शाकाहार में भी हिंसा है ?

ब्र० कु० सुधा, दिल्ली

जब मैं वनस्पति विज्ञान (Botany) में दिल्ली विश्वविद्यालय में एम० एस० सी० की पढ़ाई पढ़ रही थी तब मैं तो कई वर्षों से ईश्वरीय ज्ञान के नियमों में चल ही रही थी। परन्तु जब कभी सहपाठियों से माँसाहार के परित्याग की बात होती तो उनमें से कुछेक विज्ञानाभिमानी (Science-Proud) विद्यार्थी मुझसे कहते—"आप तो वनस्पति विज्ञान की विद्यार्थी होने के नाते जानती हैं कि पेड़-पौधे भी पशु-पक्षियों की तरह सजीव (Living) हैं। अत: जबकि आप फल, सब्जियों व अनाज इत्यादि का सेवन करती हैं तो फिर आपको एक वैज्ञानिक होने के नाते माँसाहार में हिंसा का प्रयोग कैसे प्रतीत होता है ?

यों मेरे कुटुम्ब परिवार के तो सभी सदस्य शाकाहारी थे, इसलिए मैंने कभी माँस, मछली और अण्डे को तो स्पर्श तक भी नहीं किया था। यहाँ तक कि हमारे घर में प्याज व लहसुन का भी प्रयोग नहीं होता था। परन्तु जीव-विज्ञान (Biological Sciences) के आधार पर जो प्रश्न मुझसे किया जाता था, उसका उत्तर तो वे मुझसे उसी विज्ञान ही के आधार पर पाना चाहते थे। मुझे ईश्वरीय ज्ञान में आते हुए तब ६-७ वर्ष हो चुके थे। मैं शिवबाबा के ज्ञान को भली-भाँति समझती थी और उसे पूर्णत: सत्य भी मानती थी। उसके आधार पर मैं आम लोगों को तो यह भी बताया करती थी कि यह अशुद्ध भोजन है। मैं उन्हें यह भी समझाया करती कि किसी की हत्या करके अपना पेट पालन करना मानवीय गुणों के विपरीत है और कि इस आदत से तो मनुष्य निर्दयी हो जाता है। इस किस्म की अनेक युक्तियों से मैं लोगों के प्रश्नों का समाधान कर दिया करती। परन्तु ये जो मेरे सहपाठी थे, इनमें से कुछेक विज्ञान ही के आधार पर इस प्रश्न का उत्तर जानने की जिद्द किये हुए थे।

वनस्पति विज्ञान से और बाबा के श्रेष्ठ ज्ञान से मैं यह समझ गई थी कि पशु-पक्षियों और वनस्पति में क्या अन्तर है और क्या साम्य है। जीव-विज्ञान के अध्ययन के अन्तर्गत मैंने यह भी पढ़ा था कि जीवन (Life) के क्या चिह्न हैं ? उसमें यह बताया गया था कि पशु-पक्षियों और पौधों में ये समलक्षण है कि वे बढ़ते हैं अर्थात वृद्धि (Growth) को प्राप्त होते हैं, अपने वंश की उत्पत्ति (Reproduction of their own species) करने की प्राय: क्षमता वाले होते हैं और वे भोज्य पदार्थों को अपनी आवश्यकता अनुसार बदल कर (Metabolism) स्वयं में जज्ब (assimilate) कर लेते हैं परन्तु साथ-साथ मैं ईश्वरीय ज्ञान के आधार पर यह समझ गई थी कि दोनों में विषमता अथवा अन्तर यह है कि पशु-पक्षियों में तो आत्मा होती है जबकि पेड़-पौधों में नहीं होती।

मैं देखती थी कि आम लोगों को इस भेद का पता नहीं होता। वे दोनों के सम लक्षणों को देखकर दोनों को ही एक-जैसा मान लेते थे। वे इस बात को ओर ध्यान नहीं देते थे कि पशु-पक्षियों में तो चेतनता है जबकि पेड़-पौधों में चेतनता नहीं है। क्योंकि चेतन आत्मा स्थूल नेत्रों से दिखाई नहीं देती और अन्य ज्ञानेन्द्रियों द्वारा भी नहीं जानी जा सकती इसलिए वे इसके अस्तित्व से ही इन्कार कर देते थे।

अब जब मैं इस सूक्ष्म अन्तर को जान चुकी थी तो मैं उन्हें यह बताती थी कि वास्तव में 'जीवन' शब्द की व्याख्या को स्पष्ट जानने की

ज़रूरत है। आज जीव-विज्ञान (Biology) के ज्ञाता जिसे 'जीवन' (Life) कहते हैं, वह तो वास्तव में प्रकृति की ही एक ऐसी अवस्था का नाम है जब उसमें पूर्वोक्त तीन लक्षण—भोज्य पदार्थों का रूपान्तरीकरण (Metabolism), वृद्धि (Growth), वंशानुवृद्धि (Reproduction) हों परन्तु साथ में यह भी तो देखने की ज़रूरत है कि शरीर में एक चेतन का भी तो अस्तित्व है। उसके बिना सोचने, समझने, पहचानने, अनुभव करने, याद रखने इत्यादि की क्रिया नहीं होती और न ही सुख-दुःख होता है और इस बात को जानने से बहुत अन्तर पड़ जाता है।

अन्तर यह है कि अगर पेड़-पौधों में सुख-दुःख का अनुभव करने वाली चेतन सत्ता का अस्तित्व नहीं है, तब तो फिर इसकी हिंसा करने का प्रश्न ही पैदा नहीं होता। और अगर इनमें चेतनता का अस्तित्व है तब फिर शाकाहार भी हिंसा से प्राप्त हुआ आहार माना जाएगा। परन्तु यह बात निश्चित है कि पेड़-पौधों में चेतन आत्माओं का निवास नहीं है तभी तो जो चेतन सत्ता के लक्षण हैं—सोचना (Thinking), समझना (Understanding) पहचानना (Discriminating), अनुभव (Feeling), स्मृति (Memory), इच्छा (Desire), पुरुषार्थ (Effort) इत्यादि नहीं दिखाई देते।

कुछ लोग कहते हैं कि साग-सब्ज़ी, फल-फूल और पेड़-पौधों में भी चेतनता है यद्यपि वह इतने न्यून स्तर की है कि पशु-पक्षियों की तुलना में 'न' के बराबर भासित होती है। उनका कहना यह है कि इन पर हमारे विचारों का भी प्रभाव पड़ता है गोया एक प्रकार से हमारी बातों को सुनते भी हैं यद्यपि उनके सुनने का विधि-विधान हमसे अलग है।

जो लोग ऐसा कहते हैं, उन्हें इस बात को स्पष्ट जानने की ज़रूरत है कि मनुष्य के विचारों का प्रभाव तो स्थूल और जड़ पदार्थों पर भी पड़ता है जो कि वनस्पति जगत से भी बाहर की चीज़ें हैं। स्वयं रूस के नास्तिक लोगों ने भी यह देखा है कि वहाँ की एक महिला की विचार शक्ति एक तराज़ु, डबल रोटी या घड़ी पर भी प्रभाव डाल देती है। अतः यह कोई चेतनता का प्रमाण नहीं है। इन सब बातों को सामने रखते हुए यह बात निर्विवाद हो जाती है कि पेड़-पौधों से प्राप्त होने वाले पदार्थों को खाना माँसाहार की तरह हिंसा-युक्त आचरण नहीं है। शाकाहार के अन्य जो लाभ हैं और माँसाहार की अन्य जो हानियाँ हैं, सो अलग।

समर्पण (शेष पृष्ठ १२ का)

मास काटकर बाज के सामने डाल दिया। सारे दरबारी घबरा उठे। एवं बाज भी अब शायद राजा का इरादा समझ गया था, अब वह उड़ गया।

उस दयालू राजा ने केवल एक पक्षी के समर्पण भाव को देखकर ही अपनी जान जोखिम में डाली। एवं उस समर्पित हुये पक्षी की रक्षा अवश्य की।

आज इस बेहद के संगम रूपी अमृतवेले में राजाओं के भी राजा परमप्रिय, अति दयालू परम पिता परमात्मा शिव बाबा पधारे हैं। जो भी आत्मा रूपी कबूतर माया रूपी बाज से बचने के लिए अपने आपको शिव बाबा को समर्पित कर देते हैं "बाबा बस मैं आपका और आप मेरे" हैं। बाबा पर पूरा निश्चय होता है तो उस आत्मा के समर्पण भाव को देखकर बाबा उसकी माया बाज से उसी प्रकार रक्षा करते हैं जैसे राजा ने उस कबूतर की की थी।

बाबा कहते—माम् एकम् शरणं व्रज। हे आत्माओ, तुम देह सहित देह के सर्व सम्बन्धों को भूल सर्व समभाव से अपने आपको मुझे अर्पण कर दो। अर्थात तुम मेरे बन जाओ तो मैं भी अपने सर्व खजानों सहित (स्वर्ग सहित) तुम्हारा हो जाऊँगा। सुनी बाबा की यह वाणी जो कानों से गुजरकर हड्डी को भी पिघला देती है। समर्पण एक ऐसा दिव्य गुण है जो हमें बाबा के बहुत अति नजदीक पहुंचा देता है। अतः इस गुण को अपने जीवन में अच्छी रीति से जरूर धारण करना चाहिए। ❑

एक अनोखा अनुभव

बदल गई दुनिया मेरी

वाह रे जादूगर तेरी जादूगरी

ब्र० कु० नरेन्द्र विश्वास, बुरहानपुर द्वारा प्रेषित

मेरे शरीर का नाम नौसरी पारसी है, जलगाँव के नजदीक पालधी में रहता हूँ। **करीब दो वर्ष से ईश्वरीय ज्ञान का नियमित विद्यार्थी हूँ ?** आज मेरे जीवन को देख, मेरे चेहरे को देख लोगों को विश्वास ही नहीं होता कि यह वही दो वर्ष पूर्व वाला पारसी है। जिसके नैनों से शोले बरसते, जिसे दूर से आता देख मातायें अपने घर में छुप जातीं, बच्चे भी भय खाते, सारा गाँव ही किनारा करता।

सचमुच मेरे जीवन में अचानक बड़ा परिवर्तन देख सब आश्चर्य चकित होते। और मैं मन ही मन उस शिव बाबा का लाख-लाख शुक्रिया मानता जिसने मुझे नर्क समान जीवन से निकाल देवतुल्य बनाया। आज सारा गाँव निडर होकर मिलता, बच्चे मेरे आँगन में आकर खेलते, मातायें बगैर भय हालचाल पूछतीं, नैनों में क्रूरता की जगह अब शीतलता एवं शान्ति समा गई, इसलिए सभी मुझे अब शान्तिलाल के नाम से ही पुकारते हैं।

यह आश्चर्यजनक परिवर्तन कैसे हुआ ?

करीब २ वर्ष पूर्व की बात है। जब मैं कठिन बिमारी के दौर से गुजर रहा था। शरीर जर-जर हो गया था। शरीर के साथ-साथ मानसिक सन्तुलन बिगड़ चुका था। मैं दिन-रात बिस्तर पर पड़ा आहें भरता। एक दिन वर्ष सा लगता, सभी निकट के सम्बन्धी भी उस समय मुझसे दूर थे। मन का सन्तुलन इतना बिगड़ गया था कि मैं पागलों की तरह चिल्लाता रहता था। जरा सी आवाज आने पर मेरा क्रोध भभक उठता, फिर जिसे शान्त करना कठिन हो जाता था। बिना कारण ही मैं किसी पर भी बरस उठता। इसलिये कोई भी मेरा हाल पूछने नहीं आता। मेरी एक नौकरानी चुपके से खाना रखकर व दवाई रखकर गायब हो जाती। उसको पल भर भी सामने रुकने की हिम्मत नहीं होती, डाक्टर के मतानुसार मैं चन्द दिनों का मेहमान था।

किन्तु ड्रामा की भावी के अनुसार ऐसे में भुसावल से सफेद वस्त्र धारी बहनें उस गाँव में ईश्वरीय सन्देश देने आईं। वह एक मन्दिर में रोज सत्संग करातीं और चली जातीं। मन्दिर में यथा-व्यवस्था न होने से उन्होंने गाँव में एक कमरे की तलाश की—परन्तु उन्हें सफलता नहीं मिली।

उन्हें कहीं से ज्ञात हवा कि गाँव में पारसी का मकान बड़ा है। परन्तु पारसी से कुछ दिन के लिये मकान माँगे कौन ? वह कब क्या बोल देगा भरोसा नहीं। वह किसी से बात ही नहीं करता, बड़ा भयानक आदमी है। ऐसे शब्द उन बहनों के कानों पर पड़े। परन्तु शिव शक्तियों ने बिना भय, बड़े स्नेह से कुछ दिन के लिये मकान माँगा। पहले तो मैंने मना किया परन्तु रोज-रोज स्नेहपूर्ण आग्रह को देख मैंने एक खराब सा कमरा दे दिया। परन्तु जल्द खाली कर देने की चेतावनी भी दे दी। कमरा देकर फिर मैं पछताने लगा कहीं यह कब्जा न कर लें। मैंने मन में उन्हें तंग करने की योजना बनाई। उनके पालधी आने से पहले मैं उस कमरे में बकरी बाँध देता था व बकरी कमरा गंदा कर देती। किन्तु तब आश्चर्य होता जब बहनें बिना कोई शिकायत के रोज कमरा साफ कर देतीं। यह सिलसिला काफी दिनों तक चलता रहा।

इन दिनों मैं उनके प्रेमपूर्ण व्यवहार, आत्मीयता

(शेष पृष्ठ १६ पर)

समर्पण

ब्र० कु० मांगीलाल कोटा (राज०)

रात अपनी कृष्ण चादर को समेट कर जा चुकी थी। रवि अपनी स्वर्णिम रश्मियों को आहिस्ते-आहिस्ते बिखेर रहा था। आकाश में लालिमा फैल गई थी। उषा नव दिन के आगमन की सूचना दे रही थी। लतायें, पुष्प, कलियाँ खिलकर हँस रहे थे। वृक्षों पर पक्षी चहचहा रहे थे मानो वे अपनी भाषा में प्रभू के गुणगान कर रहे हों। अहा! कितना मनमोहक था यह अमृत बेला। इस समय सचमुच अमृत ही धरा पर आकाश से बरस रहा था।

अब तो अनन्त दूर क्षितिज में पहाड़ी की ओट लेकर लाल-लाल भानू संसार को देखने लगा था। यहीं एक राजा का शाही उपवन था। एक बार राजा बगीचे की सैर करने अपने दरबारियों के साथ आया था उस दिन। घूमते घूमते बहुत दूर निकल गये। एक जगह सुनहरी हरी-हरी दूब देखकर बैठ गये वे सब। अब सूर्य भी पूरी तरह निकल चुका था एवं लालिमा विलुप्त हो गई थी।

राजा बगीचे में बैठे हुये अपनी राजधानी के बारे में, राजकाज के बारे में मन्त्रियों से बातें कर रहे थे। अभी थोड़ी ही देर हुई थी कि आकाश से किसी पक्षी की करुण ध्वनि सबके कानों में गूंज गई। सबका ध्यान बरबस ऊपर चला गया। देखते हैं एक घायल कबूतर उड़ता हुआ आ रहा था उन्हीं की ओर। उसके पंख लड़खड़ा रहे थे, लग ऐसा रहा था मानो यह गिर पड़ेगा। सारा शरीर रक्त से भीगा था।

वह उड़ता हुआ नीचे उतरा एवं धीरे से केवल राजा की ही गोद में जाकर गिर पड़ा। इतने में थोड़ी ही देर बाद एक भयंकर बाज उड़ता आया। जब उसने अपने शिकार को राजा की गोद में देखा तो तेजी से उसने एक झपट्ठा मारा, कबूतर को दबोचने के लिए। परन्तु कबूतर तो राजा की गोद में ऐसे छिप गया था जैसे एक अबोध शिशु माँ की गोद में जाने के बाद निश्चिन्त हो जाता है। बाज उड़ता हुआ बगीचे में एक वृक्ष पर जा बैठा। बजा देखकर उड़ा एवं राजा के सर से होकर गुजरा। ऐसा लगा मानो वह राजा को अपनी हुक जैसी पैनी चोंच मार देगा। एवं दूसरे वृक्ष पर जा बैठा।

यह सब थोड़ी ही देर में घटित हो गया। सभी इस खेल को कोतूहल पूर्वक देख रहे थे। यह समझते देर न लगी कि यह कबूतर इस बाज का शिकार है। एक मंत्री बोला—

मन्त्री—राजन यह कबूतर इस बाज का भोजन है। इसे आप छोड़ दें, नहीं तो यह बाज हमारा पीछा छोड़ने वाला नहीं है।

राजा—नहीं! मैं इस शरण में आये कबूतर को नहीं छोड़ूंगा। इस भोले पक्षी ने किसी का क्या बिगाड़ा। इस छोटे प्राणी ने मुझ पर विश्वास किया। अपने को मेरे समर्पण किया है आखिर क्यों? पक्षी तो इन्सानों से डरते हैं। परन्तु इसने अपने को मेरे हवाले किया है। इसके प्राणों की रक्षा करना मेरा धर्म है।

दूसरा मन्त्री—परन्तु महाराज! एक की रक्षा दूसरे की हत्या, यह कैसा न्याय?

राजा—वह कैसे? इससे दूसरे की हत्या कैसे?

मन्त्री—वह इस प्रकार कि आप कबूतर की रक्षा तो कर लेंगे परन्तु उस बाज की रक्षा कौन करेगा? क्योंकि यह उसका भोजन है। अतः वह मरेगा या नहीं?

राजा—ठीक है। मैं उसके लिए उसका भोजन मंगवा देता हूं। इससे दोनों की रक्षा होगी। यह कहकर राजा ने बाज के लिए तरह-तरह के मांस मंगवाये। डाले गये बाज के सामने। परन्तु बाज ने उसकी ओर देखा तक नहीं। वह तो टकटकी बांधे कबूतर को देख रहा था।

तीसरा मन्त्री—महाराज। इस कबूतर को आप छोड़ेंगे तभी यह दुष्ट बाज जायेगा अन्यथा नहीं। यह तो कबूतर को ही मारकर खाना चाहता है।

राजा—नहीं, मैं इस कबूतर को किसी भी कीमत पर नहीं छोड़ूंगा। चाहे इसके लिए मुझे अपना मास ही बाज को क्यों ना देना पड़े। यह कहकर राजा ने अपनी तलवार से अपनी जंघा का

(शेष पृष्ठ १० पर)

क्षमाशीलता

ब्र० कु० चक्रधारी, दिल्ली

एक राजा स्वभाव ही से न्यायकारी भी था और क्षमाशील भी। वह अपराधियों को दण्ड भी देता था परन्तु किसी की स्थिति और परिस्थिति को देखकर उसके दण्ड को हल्का भी कर देता या उसे क्षमा भी कर देता था। इस प्रकार प्रजा उस राजा के गुणों और कर्त्तव्यों से सन्तुष्ट थी और स्वयं को सौभाग्यशाली मानती थी कि उन्हें एक ऐसे राजा की छत्रछाया प्राप्त हुई है।

एक बार राजा के कोषाध्यक्ष और लेखाधिकारी (Accounts Officer) ने जब पिछले हिसाब-किताब की जांच की तो उन्हें मालूम हुआ कि एक कर्मचारों ने १००० रुपये का ऋण लिया हुआ है जो उसने अभी तक चुकता नहीं किया जबकि चुकता करने की अवधि समाप्त हो चुकी है।

कर्त्तव्य परायण और वफादार लेखाधिकारी ने राजा को इस बात का समाचार देने से पहले यह सोचा कि पहले वह स्वयं उस कर्मचारी से यह रकम वसूल करने की कोशिश करे। इस विचार से उसने कर्मचारी को अपने पास बुलवाकर उससे रकम माँगी और उसे बताया कि यदि वह अब भी ऋण नहीं चुकाएगा तो इसकी खबर राजा को दी जाएगी और तब उस न्यायकारी राजा के सामने उसे पेश होना पड़ेगा और उसकी नौकरी भी छूट जाएगी तथा वह दण्डित भी होगा।

कर्मचारी ने सारी बात को सुना और यह भी समझा कि ऋण न चुकाने से उसे कारावास में जाना पड़ सकता है। परन्तु वर्तमान परिस्थिति में वह यह रकम लौटाने में असमर्थ था। अतः उसके पास जब कोई दूसरा उपाय हो नहीं था तो उसने लेखाधिकारी को अपनी कठिनाई से अवगत कर दिया।

लेखाधिकारी भी क्या कर सकता था। अब तो उसका यही कर्त्तव्य था कि वह उसे राजा के सामने पेश करे। अतः निश्चित दिन और निश्चित समय वह उसे राजा के पास ले गया और उसने बाअदब राजा को सारी बात कह सुनाई।

जब वह राजा से यह किस्सा कह रहा था, तब वह कर्मचारी गर्दन नीचे झुकाए, आँखें धरती पर गाड़े चुपचाप खड़ा रहा। एक ओर तो उसे लज्जा आ रही थी कि आज वह अपने पैसे नहीं चुका सकता, दूसरी ओर वह अपनी विवशता के कारण मायूस था, तीसरी ओर वह इस भय से आक्रान्त था कि न जाने अब महाराज क्या दण्ड सुनायेंगे।

जब लेखाधिकारी सारा किस्सा सुना रहा था तब राजा उस कर्मचारी के हाव-भाव और उसकी रूप-रेखा को ध्यान से देख रहा था। राजा को ऐसा महसूस हुआ कि यह कर्मचारी लाचार है, यह बाल-बच्चेदार आदमी है, कोई दुःख की घड़ी आने पर इसने ऋण ले तो लिया परन्तु वेतन से बचत न रहने पर यह उतने समय में पैसे नहीं चुका पाया जितने समय में चुकाने की इसने आशा की थी।

इस सारी स्थिति को भांपकर राजा ने यह हुक्म दिया कि यह कर्मचारी पैसा चुकाने में असमर्थ मालूम होता है वर्ना इसकी नीयत में दोष नहीं है। अतः इसे माफ किया जाता है और जो रकम इसने ली थी, उसे ऋण की बजाय राज दरबार से सहायता के रूप में शुमार किया जाए और इसके बाद इस किस्से को समाप्त किया जाए।

राजा के ऐसा हुक्म सुनाने के बाद ऐसा लग रहा था कि जैसे उस कर्मचारी में फिर से जान आ गई हो। अब उसके चेहरे पर खुशी व शुक्रिया की रेखाएँ उभर आईं थीं और उसने वहाँ से प्रस्थान किया।

वहाँ से छूटने के बाद वह कर्मचारी सीधे ही एक ऐसे व्यक्ति के पास गया जिसने १०० रुपया उस कर्मचारी से उधार लिया था। उस व्यक्ति के पास पहुंचकर कर्मचारी ने उसे अपने आने का प्रयोजन बताया। उसने उस व्यक्ति को कहा कि

वह उसका १०० रुपया वापस कर दे। उस व्यक्ति ने कहा कि उसकी पत्नी बीमार है और कि इस परिस्थिति में वह उसका ऋण चुकाने में असमर्थ है। उसने बड़े अनुनय-विनय से क्षमा याचना की और यह भी कहा कि वह पैसे जल्दी लौटाने की कोशिश करेगा। परन्तु इस समय जब उसके पास हैं ही नहीं तब वह १०० रुपये तो क्या उसका थोड़ा अंश भी नहीं लौटा सकेगा ! उस व्यक्ति ने कर्मचारी को यह भी बताया कि न लौटा सकने के कारण वह शर्मिन्दा है।

परन्तु कर्मचारी हठ पर उतर आया था। उसने उस व्यक्ति की प्रार्थना को अस्वीकार कर दिया और कहा कि तुम्हें पैसे देने ही होंगे, चाहे तुम्हें कहीं से भी लाने पड़ें। जब कर्मचारी ने देखा कि वह व्यक्ति पैसे नहीं देता और चुप होकर गर्दन झुकाए मायूस बैठा है तो भी उसने उस व्यक्ति पर प्रहार किया ताकि वह डरकर कहीं से भी पैसों का इन्तज़ाम करके उसे दे दे।

इस प्रहार के परिणाम स्वरूप वह ऋणी व्यक्ति चिल्ला उठा। उसे चोटें आईं और आख़िर यह किस्सा राजा के पास पहुँचा। जब उस कर्मचारी को राजा के सामने पेश किया गया—तब राजा ने उसे कहा कि मैंने तो तुम पर दया करके तुम्हारे १००० रुपये माफ कर दिये थे; तुम ऐसे निर्दयी निकले कि तुम अपने ऋणी को १०० रुपये भी माफ नहीं कर सके। अब मैं यदि तुम पर १००० रुपये का दण्ड लगाऊँ और कारावास में कड़ा दण्ड भी दूँ, तब तुम्हारा क्या हाल होगा ?"

यह सुनकर उस कर्मचारी के लज्जा से पसीने छूट गए और उसे अपने कर्म पर बहुत अफसोस हुआ।

हम देखते हैं कि इस कलियुग में प्रायः हरेक मनुष्य का दूसरों से ऐसा ही व्यवहार है। परमपिता परमात्मा न्यायकारी भी हैं और क्षमाशील भी। वह गुणवान भी हैं और सन्तुष्टकारी भी। मनुष्य पर अपने कर्मों का भारी ऋण चढ़ा हुआ है और यदि सच्ची नीयत से, मौन भाव से वह प्रायश्चित करता है तो दयालु परमात्मा उसका कुछ अंश उसे क्षमा भी कर सकते हैं परन्तु अफ़सोस है कि वह अपनी तो १००० भूलों को क्षमा कराना चाहता है और दूसरे किसी की एक भूल भी माफ नहीं करना चाहता।

प्यारे बच्चो, हमारा यह भाव नहीं कि यदि किसी ने हमसे कोई धनराशि उधार ली हो तो हम उससे वापस न लें बल्कि हम तो यह कहना चाहते हैं कि अगर किसी से कोई छोटी-मोटी भूल हो जाए और वह सच्ची नीयत से प्रायश्चित करे तो हमें क्षमाशील भी बनना चाहिए। न्याय की स्थिति में न्याय और क्षमा की स्थिति में क्षमा।

भोपाल के राजयोग भवन का—वार्षिक उत्सव 'विश्व शान्ति सम्मेलन' के रूप में मनाया गया। इस सम्मेलन का उद्घाटन मध्य प्रदेश के राज्यपाल प्रो० के० एम० चांडी के द्वारा सम्पन्न हुआ। राज्यपाल महोदय ने अपने वक्तव्य में ब्र० कु० अभियान को इस शताब्दी का एक महान शान्ति अभियान बताया एवं कहा कि यह संस्था विश्व में आपसी प्रेमभाव, मानवता और सदाचार के विकास के लिए वर्षों से कार्य कर रही है। आपने कहा कि क्षेत्रीयतर और वर्ग मोह के कारण जो अहंकार होता वह एक विशाल विभिषिका की ओर ले जा रहा है। और इससे बचाव के लिए विश्व भ्रातृतत्व, प्रेमभाव और आपसी सहिष्णुता बढ़नी चाहिए क्योंकि यहीं सभी धर्मों का मूल है। यह संस्था इसके लिए महान कार्य कर रही है।

इस अवसर पर मध्यप्रदेश के वित्त मंत्री भी पधारे। उन्होंने ऐसे कार्यक्रमों की सराहना करते कहा कि दुनिया के बदलने के लिए पहले स्वयं को बदलना आवश्यक है। और ब्र० कु० और कुमारियों पहले स्वयं को चरित्रवान बनाते हैं। फिर दुनिया को बदलने की सेवा करते हैं।

इसके साथ ही सर्व धर्म सम्मेलन का भी आयोजन किया गया जिसमें भ्राता जगदीश चन्द्र मुख्य संपादक ज्ञानामृत, वर्ल्डरिन्यूअल एव प्युरिटी ने बताया कि कैसे अनेक भाषाओं में बुराइयों को त्यागने की एक सी ही बात कही गयी है। उन्होंने कहा कि हमें स्वयं को आत्मा समझकर एक परमात्मा की संतान समझ कर आपस में व्यवहार करना चाहिए।

धर्म सम्मेलन में भोपाल के इमाम, मुफ़्ती अब्दुल रंजाक भी उपस्थित थे उन्होंने कहा कि हमें धर्मों के मूल पर जाकर अमन चैन और सकून के लिए कार्य करना चाहिए। उन्होंने आज की राष्ट्रीय स्थिति पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि हमें पैदल चलकर सभी को अमन और सकून से कार्य करने लिए कहना चाहिए।

इसी अवसर आबू पर्वत से आयी दादी मनोहर इन्द्रा जी ने भी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की शिक्षाओं को समझाते हुए राजयोग का अभ्यास कराया।

मन पवित्र तो श्रेष्ठ चरित्र

ब्र० कु० रामप्रसाद

प्रत्येक व्यक्ति का मन वायु की तरह मुक्त, अनिबंध, स्वच्छन्द और अबाध गति से निरन्तर सर्वत्र घूमता रहता है। वह नित्य नूतन कल्पनाएं करता है, नवीन स्फुरण से अनुप्राणित होकर अपने जीवन में विविध सपने संजोता है। आशा, अंकाशा के ताने-बाने बुनता है। कल्पनाओं को साकार रूप में देखना चाहता है, जबकि प्रत्येक मनुष्य यह अच्छी तरह जानता है कि सभी सुदर्शन तत्व ग्राह्य नहीं होते। ढोल के स्वर दूर से ही सुहावने लगते हैं। विष भरे घड़े के मुंह में दूध रहता है, सैमल का फूल केवल बाहर से ही सुन्दर दिखाई देता है। ठीक इसी प्रकार सुन्दर कल्पनाओं के बगीचे में मन पसन्द फूल खिलाना चाहता है—पर यह संभव भी हो सकता है कि सपने पूरे ना हों फिर भी यथार्थ की कठोरता से बचने के लिए वह नानाविध कल्पनाओं में लीन रहता है, और यह है भी स्वाभाविक एक और मनुष्य के सामने कटू सत्य जो उसे दुख के ही दर्शन कराता है। सूरदास ने सत्य के दर्शन करने की उत्सुकता में अपनी आंखें ही खो दीं थी और दूसरी ओर है उसकी संसार के संपूर्ण सौन्दर्य को पा लेने की उत्कृष्ट इच्छा, जिसके लिए उसकी कल्पनाओं के द्वार उन्मुख हैं।

आत्म विश्वास और मन में दृढ़ संकल्प मनुष्य की कल्पनाओं को साकार कर सकते हैं पर संकल्प श्रेष्ठ हो, कल्याणकारी हो ऐसे पूरे अवश्य होते हैं, लिखा भी है—

"जो विचार कीन्ह मन माही।
प्रभु प्रताप कहु दुर्लभ नाही॥"

यथार्थ की कठोरता से बचने के लिए और कल्पना प्रिय होने के कारण प्रत्येक सहृदय अपना एक अलग संसार बनाये रखता है। मधुर सपनों से भरे इस संसार में न तो अभाव-ग्रस्तता है न कठोरता न जीवन जगत की विसंगतियां हैं, न मृत्यु का भय। यह संसार तो मन के भीतर जिजिविषा बनाये रखता और प्रेरणा देता है व्यक्ति को चिन्तन की। चिन्तन की क्षमता ही मनुष्य को पशु पक्षियों से अलग करती है। किसी न किसी प्रकार का चिन्तन हम अनवरत करते ही हैं और यदि हम फुरसत में हों तब तो हमारी चिन्तन धारा अबाध हो जाती है। कल्पना की ऊंची उड़ान भरने के अवसर उस समय हमें खूब मिलते हैं, जब हम अपनी दैनंदिन से मुक्त-स्वच्छंद रहते हैं। ऐसे मौके पर हमारे चिन्तन में सिर्फ विश्व कल्याण की बातें ही समाई हों तो फिर विचारों में श्रेष्ठता तथा कर्मों में सफलता नजर आती दिखाई देगी। अगर हम व्यर्थ का चिन्तन करते रहेंगे तो समर्थ नहीं बन पायेंगे, और इसलिए सदा आत्म और परमात्म चिन्तन करते रहो तो यथार्थ कल्पनाशीलता में बाधक न बनकर चिन्ता से मुक्त कराता है क्योंकि कल्पना में विचरण करते हुए हम अनेक बातों के विषय में सोचते हैं। कभी-कभी जब मन बाहरी वस्तुओं के प्रति चिन्ता भाव से मुक्त होना चाहता है और समस्याओं को भूल जाना चाहता है पर बाहरी व्यर्थ चिन्तन हमें फुरसत के क्षणों में भी मुक्त नहीं होने देंगे। अपने उत्तरदायित्वों से और परिस्थितियों से जकड़ लेता है।

फिर भी हमारी कोशिश यही रहती है कि कुछ समय के लिए अन्न, वस्त्र और आवास की दैनंदिन समस्याओं को भूलकर इस वक्त के भागम भाग से हटकर जीवन-इच्छा, अस्मिता की खो, निरुद्देश्य और निष्प्रयोजन आनंद की प्राप्ति की ओर हमारा लक्ष्य बने। इसके लिए हमारी बुद्धि कई

तरफ भागती है और हमारी दृष्टि पहले ललित कलाओं की ओर आकर्षित हो कोरी कल्पनाओं में बहती नजर आती है। ऐसी स्थिति में परमात्मा का आध्यात्मिक ज्ञान सर्वाधिक आकृष्ट करता है, क्योंकि उसमें एक ओर आत्मा परमात्मा का यर्थाथ सत्य ज्ञान है तो दूसरी ओर जीवन और जगत का यथावत् चित्रण मिलता है। इससे हमारी जिज्ञासा, हमारी कल्पना के द्वार भी उन्मुक्त हैं और अनुशासित भी हैं। जो चिन्तन करने योग्य है उसका चिन्तन करे तो आनंद प्राप्त होता है। और जो चिन्तन करने योग्य नहीं उसका चिन्तन करे तो चिन्ता और दुख की प्राप्ति के अलावा समय की बर्बादी भी हो जाती है। जहां तक मेरा अनुभव यही कहता है, परमात्मा के सिवाय किसी का चिन्तन करना उतना महत्व नहीं रखता जितना कि परमात्मा की सशक्त और विस्तृत फलक वाली ज्ञान मुरली रखती है। मेरी अपनी यह रुचि का प्रश्न है तो फुरसत के समय चिन्तन में ज्ञान मुरली ही मेरी सबसे अधिक प्रिय विद्या है। इस मुरली में कुछ न कुछ हर बार नया मिलता ही रहता है। इस मुरली को पुनः पढ़ना मुझे बेहद अच्छा लगता है। इनको पढ़ने का उद्देश्य केवल समय व्यतीत करना मात्र नहीं है और न ही मनोरंजन की दृष्टि से इनका पारायण करना है बल्कि मुरली में परम पावन परमात्मा के अमूल्य महावाक्य जो संस्कारों को परिवर्तन कर चरित्र के निर्माण में सदा सहयोगी हैं। इस मुरली में विद्यमान पवित्रता सुख शांति की सुगंध और प्रेम परमात्म मिलन की नयी भावमयी दृष्टि मुझे बार-बार अपनी ओर आकर्षित कर खींचती है। ऐसा मन सदा प्रभु प्रेम में मुग्ध होकर व्यर्थ चिन्तन से मुझे बचा कर सेफ रखता है। मन में श्रेष्ठ भावनाएँ, कामनाएँ हों तो बुद्धि भी विकसित होती है। "खाली मन शैतान का घर" के समान होता है, इसलिए दैनिक कार्यों से अवसर मिले तो इस चंचल मन को परमात्मा में लगाकर रखे तो मन भी पवित्र बन जाता है और अगर हमारा मन पवित्र होगा तो हमारा चरित्र भी श्रेष्ठ होगा। पवित्र मन को बांधने की, मारने की आवश्यकता नहीं पड़ती अपितु ये मन पवित्रता की चमक से अंधकार रूपी सूने जीवन में दमक भरकर शुभ भावना तथा कल्याणकारी कल्पनाओं के सुन्दर सपने संजोकर मानव को महान बनाने में सफल सिद्ध होता है। जिसका मन पवित्र तो श्रेष्ठ चरित्र होगा ही। इसलिए पवित्रता हमारे हर संकल्प में कूट-कूटकर भरी जानी चाहिये। मन में भी अपवित्रता का नामोनिशान न हो क्योंकि मन की पवित्रता सबसे बड़ी पवित्रता होती है। मन से ही अच्छे-बुरे संकल्पों का उदय होता है फिर क्यों न हम अपने मन को पवित्र बनायें इससे ही जीवन में नई दिशा, सार्थक एवं उद्देश्य पूर्ण कल्याणकारी कर्मों में सफलता तथा चरित्र निर्माण व मानव के उत्थान में बढ़ावा मिलेगा।

(शेष पृष्ठ ११ का)

देखता तो मेरा धीरे-धीरे मन पिघलने लगा। धीरे-धीरे उन्होंने मेरे मन की सफाई करनी शुरू की। ईश्वरीय ज्ञान से सब कचरा निकाल मुझे सम्मानित जीवन जीने योग्य बनाया।

आज सारा मकान ईश्वरीय सेवा अर्थ है जहाँ दो बहनें रहती हैं। अब मेरा तन-मन दोनों स्वस्थ हैं। पहले मैं बहुत वृद्ध दिखता था, अब मैं युवा जैसा लगता हूँ। अब मैं गाँव-गाँव जाकर सेवा करता हूँ। आज मेरा मन अति-इन्द्रिय सुख के झूले में झूलते यह गीता गाता रहता हूँ—

तेरा बड़ा एहसान बाबा तेरा बड़ा एहसान
तूने मुझको आके सम्भाला, दिया जीवन-दान

यह ईश्वरीय ज्ञान मुझ जैसे लाखों व्यक्तियों का जीवन पलटा रहा है।

□

कुछ मीठे संस्मरण

ब्र० कु० पवनकुमार, दिल्ली

जब से बाबा का बच्चा बना हूँ, जीवन का हर पल कोई संदेश, कोई परम संबंध की कोई अभिव्यक्ति या अनुभव लेकर आया है। उन कई मामूली, लेकिन गुह्य संदेशयुक्त घटनाओं में से कुछ प्रस्तुत कर रहा हूं :

जब बाबा ने 'चाट खिलाए' :

एक दिन बस स्टाप पर खड़ा इन्तजार कर रहा था कि सामने से ठेले पर फलों का चाट बेचने वाला आवाज देता हुआ गुजरा। संकल्प चला कि बाबा ! मैं तो झट आपका बन गया। आप भी नियम बनाने के समय कम से कम हमारा खयाल कर लिए होते। ऐसा नियम बनाया कि उम्र भर यह स्वादिष्ट चाट नसीब नहीं हो पाएगी···थोड़ा सा खा ही लेते तो क्या हो जाता···और आप तो ऐसी चीज खिलाने से रहे··· बना ही नहीं सकते तो खिलाएंगे क्या···आपसे भले हम जो कम-से-कम रोटी तो जरूर आपको बनाकर खिलाते हैं···और एक आप हैं जो न मुझे चाट खाने देते हैं, न ही बनाकर खिलाते हैं···इस प्रकार बड़े मीठे एवं स्नेहयुक्त रूहरिहान बाबा के साथ कर ही रहा था कि बस आ गई और मैं सेवाकेन्द्र पर शुक्रवार शाम के क्लास के लिए पहुंचा।

क्लास के समाप्त होने पर हमारी आपस में पिकनिक हुई। और पिक-निक की टोली थी—फलों का चाट !! टोली को देखते ही मैं निहाल हो गया और दिल से यह कह रहा था कि बाबा ! आपने हमारे इतने नन्हें से नन्हें संकल्प का रेस्पोंस इतना शीघ्र और इतने प्यारे रूप से दिया, मैं आप पर कितने बार न बलिहार जाऊँ···

मास्टर सर्वशक्तिवान का आर्डिनेन्स

उन दिनों मैं सवेरे के क्लास में सदा देरी से आया करता था। उस दिन बाबा ने मुरली में कहा कि सर्वशक्तिवान बाप आर्डिनेन्स निकालते हैं कि जिनको पढ़ाई की कद्र नहीं वे ऊँच पद भी नहीं पा सकते। तुरन्त मैंने संकल्प किया, बाबा ! अब मैं कभी सुबह की मुरली मिस नहीं किया करूँगा।

दूसरे दिन बड़े सवेरे से बस स्टाप पर खड़ा था लेकिन बस कोई आ नहीं रही थी। एक-दो आईं, मगर रुकीं नहीं। घड़ी के ऊपर ध्यान गया तो ६-३० से ऊपर हो चुका था अर्थात् मुरली चलने का समय हो चुका। भाव विह्वल हो बाबा से मैंने कहा कि अगर सर्वशक्तिवान बाप आर्डिनेन्स देते हैं तो मास्टर शक्तिवान बच्चा भी आर्डिनेन्स करता है कि जब तक मैं न पहुँचूं, मुरली शुरू हो नहीं सकती। खैर मेरे पहुँचते-पहुँचते ६-४५ हो चुका था और मन में आया कि अगर बाप समय पर बस नहीं भेज सकते तो मैं समय पर मुरली कैसे सुन सकता ? फिर भी क्लास में प्रविष्ट हुआ। कमरे में पांव रखते ही बहन जी ने पढ़ा···'ओम शांति। रुहानी बाप बैठ···' मेरा मन नाच उठा।

मास्टर विघ्न-विनाशक हाजिर है···

बात पिछले दिनों की है जब दिल्ली विश्व-विद्यालय के विभिन्न कालेजों में सेवाओं का कार्य-क्रम चल रहा था। उस दिन एक कालेज में बहनों की वार्ता होने वाली थी। बड़े सवेरे ही मैं वहां के इस कार्यक्रम के संचालक से मिलने गया ताकि उस दिन के कार्यक्रम की रूप रेखा अन्तिम रूप से निश्चित की जा सके। उस वक्त उन्होंने मुझे बताया कि यद्यपि सारी तैयारियां की जा चुकी हैं, फिर भी, अन्तिम क्षण में प्रधान अध्यापक के मना कर देने के कारण यह कार्यक्रम नहीं किया जा सकता है। किञ्चित मात्र भी विचलित हुए बिना, मन ही मन ड्रामा के इस सीन का आनन्द लेते हुए

मैंने उसे बहुत मुश्किल से प्रधान अध्यापक महोदय से पुनः बात करने के लिए राजी किया।

इस बीच मेरे मन में दृढ़ता से सुबह की वाणी के वह महावाक्य गुंजायमान हो रहे थे "मीठे बच्चे ! आप विघ्न-विनाशक बाप के बच्चे मास्टर विघ्न-विनाशक हो। आपका ही नाम सुमरि कर भक्तों के विघ्न विनाश हो जाते हैं। खयाल रखना, कहीं तुम ही विघ्नों को देख विघ्न-स्वरूप तो नहीं बन जाते हो।" यह महावाक्य महावरदान स्वरूप बन मुझे बार-बार यह प्रेरणा दे रहा था कि जब स्वयं मैं मास्टर विघ्न-विनाशक चैतन्य में विघ्न के सामने उपस्थित हूं, तो विघ्न समाप्त हो जाएगा नहीं, वरण समाप्त हुआ ही पड़ा है। इसी नशे में संकल्प चलाता मैं खड़ा था, सामने वह भाई प्रधान अध्यापक से बातें कर रहा था। मैं देख रहा था कि वह मान नहीं रहे हैं एवं अस्वीकृति में सिर दाएँ-बाएँ हिला रहे हैं। फिर भी मन की मुस्कराहट गुम नहीं हुई—संकल्प भी नहीं चला कि यह कार्यक्रम हो पाएगा, या नहीं हो पायगा ?

लौटकर उस भाई ने बताया कि उस दिन का कार्यक्रम नहीं हो पाएगा एवं इस बात के लिए वह निजी रूप से शर्मिन्दा है, इत्यादि। मैंने फिर बहुत मुश्किल से उसे राजी कर पाया कि मुझे प्रधान अध्यापक से एक दफे मिलने दे। फिर बड़े ही स्नेह एवं युक्ति से जब मैंने अपनी बात रखी तो प्रधान-अध्यापक इतने सहज रूप से राजी हो गया जैसे उसने कभी "न" कही ही नहीं हो · सेवा में से विघ्न ऐसे टला जैसे कभी वह विघ्न रहा ही न हो ! मैं रोम-रोम से बाबा का शुक्रिया अदा करते, अपने श्रेष्ठ भाग्य एवं नशे पर खुद को ही मुबारिक देते, उस दिन के कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु जरूरी कार्यों में लग गया।

ऐसे ही अनगिनत अनुभव बाबा के अनगिनत अनमोल वर्दानों का आभास हर क्षण दिलाते रहते हैं। ऐसे ही अनुभव बाद "वाह बाबा वाह" का जो गायन है, वह अनायास मन के वीणा की तारों से झंकृत हो उठता है, बाबा का हम बच्चों प्रति वरदानस्वरूप मुरली का एक-एक सुर पर अन्तर्मन ता-ता थैया कर उठता है···।

□

हरिनगर (दिल्ली) में नये भवन का उद्घाटन—मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणि ने हरिनगर में बनाये गये नये भवन का उद्घाटन किया। ग्याना के उच्चायुक्त भ्राता स्टीव नारायण, बहन गायत्री मोदी तथा दिल्ली महानगर परिषद के सदस्य भ्राता जगदीश मुखी के अतिरिक्त दिल्ली के सभी सेवाकेन्द्र के मुख्य बहन-भाई भी इस अवसर पर पधारे थे। प्रवचनों एवं गीतों के कार्यक्रम द्वारा अनेकानेक लोगों ने लाभ उठाया।

इनके अतिरिक्त अनेक सेवाकेन्द्रों से भी शिवरात्रि धूमधाम से मनाने के समाचार आये हैं इनमें से गुमला, मोगा, परतवाड़ा, जगाधरी, धरान, नवरंगपुर, होसूर, लखनऊ हजरतगंज, जयपुर (राजा पार्क), सीलिगुडी आदि का उल्लेखनीय है।

बम्बई (गोरेगांव)—बम्बई के गोरेगाँव बोरीवली सेवा-केन्द्र के द्वारा महाशिवरात्रि के अवसर पर एक सर्व-धर्म-सम्मेलन का आयोजन गोरेगाँव में किया गया। इस सम्मेलन में हिन्दु, मुस्लिम, ईसाई, पारसी, जैन तथा बौद्ध धर्म के प्रतिनिधि उपस्थित थे।

रामकृष्ण मिशन के स्वामी मुमुक्षानंदजी, सेंट पायस कॉलेज, जो ईसाई मिशनरी का अन्तरराष्ट्रीय कॉलेज है, से फादर ज्युलियन सालडान्हा, मौलाना मुहमद हनीफ साहब, उप प्राचार्य दार-उल-मुल्के उस्मानिया इन्स्टीटट्यू पेश इमाम, वरली मस्जीद, जैन धर्म की ओर से साहित्य रत्न, न्यायतिर्थ सोहनलाल शास्त्रीजी, पारसी धर्म की ओर से जापानी भिक्षु टी० मोरटिया आदि ने सम्मिलित होकर अपने विचार व्यक्त किये। सभी वक्ताओं ने ईश्वरीय विश्वविद्यालय के कार्य की बहुत प्रशंसा की तथा ऐसे सम्मेलन भारत में जगह-जगह होने की आवश्यकता है—ऐसी इच्छा प्रकट की।

इस सम्मेलन का वृत्तान्त, बम्बई दूरदर्शन केन्द्र द्वारा प्रसारित किया गया।

बंगलौर सिटी—सेवाकेन्द्र की ओर से विभिन्न स्थानों पर शिव जयन्ती समारोह बड़ी धूमधाम से मनाया गया जिसमें अनेक प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने भाग लिया। भाग लेने वालों में से जगतगुरु बाल गंगाधर नाथ, चिक्कबलापुर नगर पालिका के प्रधान, निल मंगला के डवलेपमैन्ट आफिसर तथा नीलसेन्द्रा के एम० एल० ए० आदि का नाम उल्लेखनीय है।

हरिद्वार में जाने वालों को

ब्र० कु० राजकुमारी, मजलिस पार्क, देहली

बुद्धि के कमण्डल में सत्यज्ञान का माल,
आत्मस्मृति के टीके से चमकते जिनके भाल,

रूहानियत की भभूत लगाए,
देखो राजर्षि वहाँ कितने आए;
मुलाकात उनसे ज़रूर करना।
ओ हरिद्वार में जाने वाले!
उनसे इक बार ज़रूर मिलना॥

वो हैं बेहद के सन्यासी,
घरों में रहते भी प्रन्यासी;
तीन तीन नेत्रों वाले इतने सारे,
देखो! रहते सदा श्वेत वस्त्र धारे;

उनका "कुम्भ दर्शन शान्ति मेला,"
करेगा खत्म तेरा हर झमेला;
उस मेले में अवश्य पग धरना।
ओ कुम्भ मेले में जाने वाले!
उस महाकुम्भ में ज़रूर चलना॥

जीते जी मृत होकर यह शिवासन सिखाते,
तन की कुटिया में बीच भ्रकुटि आत्म धुन रमाते;
नंगे आए नंगे जाना नंगेपन का रहस्य बताते,
खाते पीते चलते फिरते कर्मयोगी का पार्ट बजाते;

साधु जमात के दर्शन चाहने वाले!
इनके दर्शन अवश्य करना।
ओ हरिद्वार में जाने वाले!
एक बार उधर ज़रूर चलना॥

एक नहीं, अश्वमनुजों के मन के इतने सारे दौड़ा के
विवेक के हवनकुण्ड में विकारों की समिधा सुलगा के;
बाद पाँच हज़ार वर्ष के खुद शिव ने ऊपर से आके,
प्रजापिता ब्रह्मा के मुख को आधार बनाके;
अश्वमेध रुद्र ज्ञान यज्ञ बेहद का रचा है—

छोड़ो तो छूटो

ब्र० कु० कुसुम, बोकारो

एक बार एक व्यक्ति एक महात्मा की कुटिया पर पहुँचा और उनसे याचना की कि कोई ऐसा सरल उपाय बतायें जो शराब की बुरी लत छूट जाये। महात्मा जी ने कुछ सोचकर उस व्यक्ति को दूसरे दिन आने को कहा। दूसरे दिन जब वह व्यक्ति निर्धारित समय पर महात्मा जी के निवास स्थान पर पहुँचा तो देखा महात्मा जी एक वृक्ष को दोनों बाहों से पकड़े खड़े हैं। शायद यह कोई योग की विधि होगी ऐसा समझ वह व्यक्ति वहीं बैठ महात्मा जी के अपने आसन पर लौटने का इन्तजार करने लगा। जब काफी समय बीत जाने पर भी महात्मा जी वैसे ही वृक्ष को बाँधे खड़े ही रहे तो वह व्यक्ति महात्मा जी के निकट आया और विनम्रता से बोला महात्मा जी आज आपने मुझ समय दिया था। महात्मा जी ने उस व्यक्ति की ओर देखा और बड़ी विवशता से बोले कि क्या करूँ भाई मैं तो स्वयं ही बहुत देर से आपके पास आना चाह रहा हूँ लेकिन यह वृक्ष मुझे छोड़ता ही नहीं है। बहुत ही आश्चर्य से वह व्यक्ति महात्मा जी को देखता रहा और बोला महात्मा जी यह आप क्या कह रहे हैं। वृक्ष को तो आपने पकड़ रखा है। आप छोड़ देंगे तो छूट जायेंगे। यह सुनते ही महात्मा जी वृक्ष को छोड़ मुस्कुराते हुए अपने आसन पर विराजे और उस व्यक्ति से कहा भाई, आप भी तो मेरी तरह शराब को पकड़े हुए हैं। शराब ने तो आपको नहीं पकड़ रखा है। आप भी अगर शराब को छोड़ देंगे तो छूट जायेगा। बात उस व्यक्ति के लग गई और सहज पुरुषार्थ से ही उसने उस दिन से शराब छोड़ दी।

अपने आध्यात्मिक पुरुषार्थ में सर्व बंधनों से मुक्त होने के लिए परम पिता, परम शिक्षक परमात्मा शिव ने हम बच्चों को यही सरल मंत्र दिया है "छोड़ो तो छूटो"। हर बात में चाहे स्वभाव परिवर्तन में, संस्कार परिवर्तन में, एक दो के सम्पर्क में आने में परिस्थितियों या विघ्नों को पार करने में, मीठे बाबा ने एक ही पाठ हम बच्चों को पक्का कराते "स्वयं छोड़ो तो छूटो।" परिस्थितियाँ हमें नहीं छोड़ेंगी। हमें छोड़ना है। इन्तजार नहीं करना है परिस्थिति छोड़े तो छूटें बल्कि इन्तजाम करना है स्वयं छोड़ने का। ब्रह्मा बाबा की यही विशेषता उन्हें नम्बर वन ले गई। बाबा ने अपने पुरुषार्थी जीवन में यह कभी नहीं सोचा कि साथी या संबंधी छोड़ें तो छूटूं। विघ्न डालने वाले छोड़ें तो छूटूं। भिन्न-भिन्न परिस्थितियाँ छोड़ें तो छूटूं।

तो हम भी Follow Fothoer "छोड़ो तो छूटो" का पाठ पक्का कर बाप समान बनने का पुरुषार्थ करें।

(शेष पृष्ठ १६ का)

कुसंस्कार तुम भी उसमें स्वाहा करना;
ओ हरिद्वार में जाने वाले!
समय का दान तनिक उधर भी करना!!
वहाँ ब्रह्मपुत्रा और सरस्वती के संग,
देखो गंगाएं चेतन कई कई आईं;

तुम सब के पाप धुलाने को,
सत्य ज्ञान जल अनुपम लाईं;
ओ गंगा में नहाने वाले!
आत्म स्नान उधर भी करना।

ओ हरिद्वार में जाने वाले!
इक पग उधर जरूर धरना॥

नाटक

प्रायश्चित

ब्र० कु० रामबाबू, विदिशा

पात्र

ऋषिकेश	—	एक निर्धन मनुष्य जिसे सुख-शान्ति की तलाश है।
करोड़ीलाल	—	मन्दिर का पुजारी।
सीता		पुजारी जी की धर्मपत्नी।
सेठ करोड़ीलाल	—	धनवान बनने के बाद पुजारी जी का नाम।
शोभा	—	सेठ करोड़ीलाल की दूसरी पत्नी।
नारद मुनी	—	
मनोहर	—	करोड़ीलाल कन्सट्रक्शन कम्पनी का मैनेजर।

प्रथम दृश्य

मन्दिर में भगवान के समक्ष ऋषिकेष जिसकी आंखों में आंसू हैं। भगवान को अपनी करुण दशा सुना रहा है। वह कहता है वाह रे भगवान वाह !

धन वाले को तूने मान दिलाया
निर्धन को दे दिया अपमान
एक की झोली में खुशियां भर दीं
इक का घर कर दिया वीरान।

थी कौन-सी माटी जिससे बनाया
तूने भेष गरीब का
किन कर्मों की सजा दी तूने
लिखकर लेख नसीब का।

गीत

धनवाले के साथी सखा सब
निर्धन का न कोई।
धन वाले ने ईमान खरीदा
प्रीत खरीदी प्रेम खरीदा
बना उसी का सब कोई।
निर्धन का न कोई।

उजड़ गई ईमान की बगिया
निर्मल प्रीत प्रेम की नगरिया।
मानव नें सच्चाई खोई
निर्धन का न कोई।
झूठ को अपना साथी बनाया
लालच में देखो प्रेम गंवाया।
सदभावनाऐं अब सोंई।
निर्धन का न कोई।
धन वाले के—

भगवान ऐसी दुनिया में जीने से तो मौत भली, बता भगवान मैं क्या करूं।

(पंडित करोड़ीलाल का प्रवेश)

पुजारी—बेटा बहुत दुःखी नजर आते हो। मगर इस पत्थर से क्या मांगते हो। इसे पूजते-पूजते मेरी आधी उम्र निकल गई। पर सुख शांति का नाम नहीं। मैं भी तुम्हारी तरह दुःखी हूँ।

ऋषिकेष—नहीं पुजारी जी, ऐसा न कहिए। सुना है ईश्वर दुःखीजनों की पुकार अवश्य सुनते हैं।

पुजारी—बेटा मैं १४ वर्ष से पुकार रहा हूँ। भगवान मुझ दरिद्र के दुख दूर कर दे मगर कोई फायदा नहीं।

(नारद मुनि का प्रवेश)

नारदजी—नारायण-नारायण, पुजारी जी व बेटा ऋषीकेष, समझो आज भगवान ने तुम्हारी सुन ली। देखो मेरे पास ये दो चीज़ें हैं। एक ये दौलत से भरा (हीरे, जवाहरात, रुपये, पैसे से) भरा कलश है। और दूसरा ईश्वरीय ज्ञान से भरा कलश है। जो सुख-शांति और आनन्द का देने वाला है। अब बेटा ऋषिकेष तुम पहले जिसे चाहो उसे चुन सकते हो।

पुजारी—धन से भरा कलश देखकर पुजारी की आंखें चकरा जाती हैं, उसे पाने के लिए तुरन्त

कहते हैं—नहीं, मुनीजी, पहले मैं चुनूंगा क्योंकि मैं ईश्वर को १४ वर्ष से पूज रहा हूँ, मैं तो धन का कलश लेना चाहता हूँ।

नारदजी—नहीं, पुजारी जी, पहले यह लड़का ही चुनेगा।

ऋषिकेष—मुनिवर, आप पहले इन्हीं को ले लेने दीजिए।

नारदजी—अच्छा पंडित जी, पहले आप ही चुंन लीजिए, आपको कौन-सा कलश चाहिए। पर सोच समझकर ही छाँटना।

पुजारी— (प्रसन्नता से उछल पड़ता है)

हाँ हाँ मैंने खूब सोच लिया है। मुझे तो धन का कलश ही चाहिए।

नारदजी—लीजिए, पंडितजी।

(पंडितजी का प्रस्थान)

नारदजी—बेटा ऋषीकेष, तुमने समझदारी से चयन किया है। ये कलश तुम्हें ईश्वरीय विश्व-विद्यालय की ओर ले जाता है। जहां तुम्हें स्वयं परमपिता शिवबाबा मिलेंगे। जिन्होंने ये ज्ञान का कलश ब्रह्माकुमारी बहनों को दिया है। और बेटा, भगवान को पा लेने के बाद दुनिया की सारी दौलत भी तुच्छ होती है। जो आनन्द सुख-शांति तुम्हें २१ जन्मों के लिए वहां मिलेगा वह धन से एक जन्म के लिए भी नहीं मिल सकता।

(अच्छा नारायण-नारायण चलता हूँ)

दूसरा दृश्य

करोड़ीलाल घर पहुँचते ही बड़बड़ाना शुरू कर देता है। हाँ···हाँ···हाँ···अरी भाग्यवान, किस्मत खुल गई। देख हीरे-मोती धन से भरा घड़ा। अरी मैं भी एक नम्बर का तीरन्दाज हूँ। मैंने उस लड़के को बेवकूफ बना दिया।

सीता—(हाथ जोड़कर भगवान से कहती है)

भगवान सचमुच आप दुःखहर्ता, सुखकर्ता हैं। गरीबों के सहारा हैं। भगवान आपने हमारे दुःख दूर कर दिये।

करोड़ीलाल—अरी ये भगवान-बगवान क्या बकती है? अगर शुक्रिया अदा करना है तो मेरी अक्ल का कर। देख, मैंने नारद जैसे मुनी को भी घुमा दिया है और ये कलश हासिल कर ही लिया। वरना आज फिर भूखों मरती।

सीता—(हाथ जोड़कर) नहीं, स्वामी ऐसा न कहो। ये सब ईश्वर की कृपा है अब हमें इस धन से अच्छे कार्य करने चाहिएँ। अपने जैसे गरीबों की भलाई में लगायेंगे जिससे हमारी तरह दूसरे पुजारी भूखों न मर सकें। पाठशाला अस्पताल भी बनवा सकते हैं।

करोड़ीलाल—बकवास बन्द करो। लगता है तेरा दिमाग फिर गया है। दौलत जिसके पास है उसे दुनिया की कोई ताकत नहीं हरा सकती। धनवान ही भगवान है। (हा···हा···हा···जोर से हँसता है) आइन्दा कंगालों, पुजारियों की बात की तो···।

सीता—नहीं स्वामी, भगवान के लिए ऐसा न कहिए।

करोड़ीलाल—स्वामी की बच्ची, चल हट अब मेरे बड़े-बड़े कारखाने होंगे। नई कार होगी। नया बंगला होगा। मैं देश का बहुत बड़ा नेता बनूंगा। मेरे शयन के लिए सोफे गद्दे, तकिए होंगे। और तुम जैसी छोकरियां मेरे पैर दबाने के काबिल भी नहीं होंगी। मेरी नई शादी होगी। और तू मेरे बच्चों की आया होगी। चल बाहर निकल, जब मेरे बच्चे हो जायें तब आना। समझी।

(बाहर निकाल देता है)

सीता—हे भगवान, ये क्या किया। मेरे पति को धन देकर मुझसे क्यों छीन लिया। भगवान, धन ने इनकी आँखों पर पर्दा डाल दिया है। इन्हें अपने पराये में कोई अन्तर नज़र नहीं आता। क्या करूँ, भगवान मैं कहाँ जाऊँ।

(ब्र० कु० ऋषीकेष का गुजरना)

ऋषीकेष—बहन, आप रो रही हैं। ईश्वर की सन्तान सुखदाता की बच्ची और दुःखी।

सीता—भैया, आप कौन है। मेरे दुःखों को आप क्या पूछते हैं। मेरे पति ने अपने दुःखों में

साथ देने वाली पत्नी को सिर्फ धन के कारण बाहर निकाल दिया। अब मैं कहाँ जाऊँ, अपने माँ-बाप के पास किस मुँह से जाऊँ।

ऋषीकेष—देह के पिता के पास न सही बहिन। अपने पिता (आत्मा के पिता) ईश्वर के पास तो जा सकती हो। देखो बहिन, जो कुछ भी होता है कल्याणकारी होता है, अच्छा हुआ इस गन्दी दुनिया से आपको मुक्ति मिल गई। वरना कितनी ही आत्माएँ ऐसी हैं बहन, जो दुनिया से निकलना तो चाहती हैं पर निकल नहीं पाती हैं। माया के बन्धनों में जकड़ी हुई हैं। ईश्वर ने आपको बन्धन मुक्त करा दिया। ये तो आपके लिए सौभाग्य की बात है। आओ बहिन, परमात्मा के ज्ञान से अपने जीवन को सफल बनाओ।

तीसरा दृश्य

(१० दिन बाद क्लास में ब्र० कु० ऋषीकेष, ब्र० कु० बहिन सीता और भाई बैठे हैं।)

ऋषीकेष— बहिन आज तुम्हें दस दिन हो गये। कहिए ईश्वर का ज्ञान कैसा लगा।

ब्र० कु० सीता—भैया, बाबा को पाकर मेरा जीवन हीरे के समान निखर आया है। मेरे जीवन में सुख-शांति और आनन्द ही आनन्द बस गया है। सोचती हूँ अपने बाबा के पास बहुत पहले क्यों नहीं आ गई।

(सुबह अमृत वेला के समय सब योग कर रहे हैं। ब्र० कु० सीता अपना गीत गा रही है)

गीत

हृदय मन्दिर के ये पट अब खुल गये
जिसकी संदली पर बाबा विराज रहे।

ज्ञान मुरली की वीणा हृदय में बजी
दिव्य गुणों की माला गले में सजी
दिल में याद बसी, नयन मूरत बसी।
सर्व सम्बन्ध की रसना बाबा से मिली
करके धारण पवित्रता मैं सज गई।
मीठे बाबा की यादों में मैं खो गई
हृदय मन्दिर···

निंद्रा पास न आ मुझे विचलित न कर
मेरे बाबा से मुझको जुदा तू न कर
अपनी चमक माया दिखाना न मुझे
सुन यादों में बाबा की समाई हूं मैं।
ठण्डी-ठण्डी हवा क्यों मन मोह रही
योग योगिन का क्यों तू तोड़ रही
पंछी वन उषा काल गगन कर के पार
मीठे बाबा से मिलते हम जोड़ दिल की तार।
हृदय मन्दिर···

चौथा दृश्य

सेठ करोड़ीलाल—टेबिल पर बहुत-सी फाइलें पड़ी हैं। करोड़ीलाल चैक करके साइन कर रहे हैं)

शोभा—स्वामी, आप रात दिन बिजनेस, बिजनेस और बिजनेस, इसके अलावा आपको और कोई भी काम नहीं है। क्या आप भूल गये कि इस घर में आपकी पत्नी भी है। जो अपने पति के मुख से प्यार के दो शब्द सुनने को बेचैन है।

सेठ करोड़ीलाल—फाइलों पर नजर झुकाये हुए) बातें करने की मुझे फुर्सत नहीं है। देखती नहीं, करोड़ीलाल कन्सट्रक्शन कम्पनी की कई शाखायें खुल चुकी हैं। और उन सबका मालिक मैं हूँ। यदि मैं ही हिसाब-किताब का ध्यान न रखूंगा तो कौन रखेगा। सुनो तुम मन बहलाने के लिए दो-चार नौकर रख लो, उनसे ही फुर्सत में बातें कर लिया करो। और सुनो, मेरे रिश्तेदारों का विशेष ध्यान रखा करो।

शोभा—सेठ करोड़ीलाल, मैं आपकी पत्नी हूँ। कोई पत्थर की मूर्ति नहीं कि जड़ बनी बैठी रहूँ। संभालों अपनी दौलत, मैं जा रही हूं।

सेठ करोड़ीलाल—अट्टहास लगाता है (हा··· हा···हा···) मुझे डरा रही हो, जाना है तो चली जा, तुझ जैसी सैकड़ों बीबियाँ बना लूंगा।

(शोभा का प्रस्थान)

दृश्य पाँचवाँ

(सेठ करोड़ीलाल सोफे पर बैठे हैं। मुख पर चिन्ता के लक्षण दिखाई दे रहे हैं। मैनेजर मनोहर का प्रवेश)

मैनेजर—मालिक आपकी कन्सट्रक्शन कम्पनी बन्द हो गई है। कस्टमर्स की माँग के विरुद्ध जाली सिमेन्ट, नकली टाइल्स से बनी बिल्डिगें गिरने लगी हैं।

सेठ करोड़ीलाल—क्या ! क्या !

मनोहर—हाँ मालिक, मैंने आपको पहले ही सचेत किया था। ये जाली काम आपको एक न एक दिन ले डूबेगा। और आज वह दिन आ गया। कर्मचारियों की तनख्वायें न मिल सकने के कारण कर्मचारी वर्ग ने हड़ताल कर दी है, आपके काले धंधों के कारनामे सरकार को पता चल चुके हैं। हमारा स्मगलिंग का आ रहा सारा सामान जहाज सहित पकड़ लिया गया है।

(सेठ करोड़ीलाल की आँखों के सामने अँधेरा छा जाता है। आवाज लड़खड़ा जाती है, चेहरा पसीना-पसीना हो जाता है।)

मैनेजर—अब कुछ नहीं हो सकता सेठजी, आपका लालच आपको ले डूबा। यह रही आपकी फाईलें। पुलिस आपकी खोज में है। और हम सरकारी गवाह बन गये हैं।

(चला जाता है)

सेठ करोड़ीलाल—भगवान, बचाओ, हे प्रभ बचाओ।

(नारद का प्रवेश)

नारदजी—अरे सेठ करोड़ीलाल जी, तुम किस भगवान को पुकारते हो। अरे धनवान ही भगवान है यह तो तुम ही कहते थे न। तुम्हारी बुद्धि तो बहुत तेज थी अब किस भगवान को पुकार रहे हो। भगवान, बगवान क्या होता है।

सेठ करोड़ीलाल—मैं अन्धा हो गया था। मुनी महाराज, मुझे माफ कर दो, दौलत ने मेरी आँखों पर पर्दा डाल दिया था, मुझे माफ कर दो।

नारद—गलती हुई है तो जाइये कर्म फल भोगिए, मैं माफ क्यों करूँ।

दृश्य छठा

(१० साल की कैद के बाद)

मजदूरी करके खाने वाला सेठ करोड़ीलाल, जिसके शरीर पर फोड़े हो गये हैं। हर पल अपनी गलती पर पछताता है और चिल्लाता है मुझे माफ कर दो भगवान ! देखो मेरी क्या दशा हो गई है। मैं सो नहीं सकता, मैंने अपनी सीता पर जुल्म किये। आज दो वक्त की रोटी बनाने वाला भी कोई नहीं है।

(नारद का प्रवेश)

नारद—रिश्तेदारों को बुलवाइये करोड़ीलाल जी, अपने रिश्तेदारों के लिए तो तुम अपनी बीवी पर भी जुल्म ढाते थे।

करोड़ीलाल—मुनि महाराज, आज मैं समझा सब मेरे धन पर मरने वाले थे। आज कोई मुझे देखने तक नहीं आता मुझसे सब नफरत करते हैं।

(मुनि का प्रस्थान)

(ब्र० कु० ऋषीकेष का प्रवेश साथ में सीता है)

करोड़ीलाल—बेटा ऋषीकेश, "बेटा मुझे ज्ञान दे मैं क्या करूँ ?"

ऋषीकेष—पुजारी जी, कर्मफल तो भोगने ही पड़ते हैं। अभी भी समय है। परमात्मा की याद से अपने अगले पिछले सारे विकर्मों को खत्म कर सकते हो। ये ही आपके लिये सच्चा प्रायश्चित होगा। और आसुरी गुणों को त्याग कर दैवी गुण धारण कर परमात्मा से २१ जन्मों की प्रालब्ध भी पा सकते हो।

करोड़ीलाल—ऋषीकेष भाई, मैं परिश्रम करूँगा ईश्वर की याद में रहूँगा। मैं अपने विकर्मों की सजा खुश होकर भोगना चाहता हूँ। हाँ भगवान आपने अच्छा ही किया जो मुझे अन्धकार में से निकाल दिया। मैं खुशी से अपने विकर्मों के फल भोगूँगा।

सीता की ओर इशारा करके कहता है ये देवी कौन है।

सीता—मैं सीता हूँ। जब आपने मुझे त्यागा तब से ही भगवान की शरण में हूँ।

सेठ करोड़ीलाल—(आँखों में आँसु भर कर कहता है)

देवी मुझे माफ कर देना।

चिरकुन्डा में शिवजयन्ति पर्व के उपलक्ष्य में लगाई गई प्रदर्शनी में भ्राता एस०के० अम्बेस्टा, एस० डी० ओ० चास, तथा भ्राता विमल पारिक अध्यक्ष चैम्बर आफ़ कामर्स, चास को ब्र० कु० कुसम चित्रों पर समझा रही हैं।

हैदराबाद में शिवजयन्ति समारोह में भ्राता महेन्द्रनाथ, वित्तमन्त्री आ० प्र० अपने विचार रखते हुए।

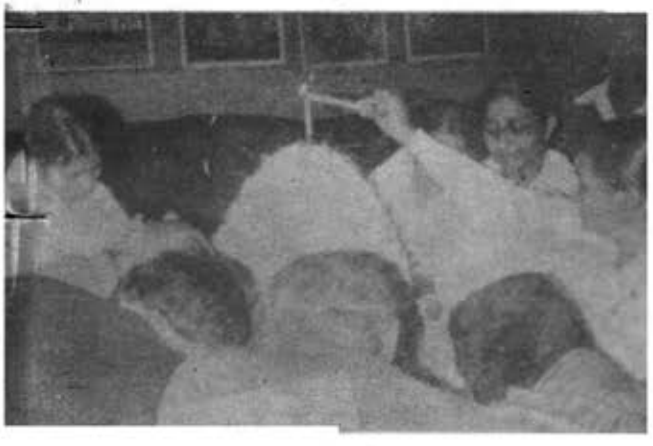

तिनसुकिया में ५०वीं शिवजयन्ती के उपलक्ष्य में आयोजित प्रदर्शनी का उद्घाटन अद्योगपति किशनलाल जी तथा अन्य कर रहे हैं

भान्डुप (बम्बई) में शिवजयन्ति पावन पर्व पर हुए कार्यक्रम में भ्राता तारासिंह, सदस्य मुंबई महानगरपालिका को श्रीलक्ष्मी श्रीनारायण का चित्र भेंट किया जा रहा है।

अमरावती में आयोजित आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन मुंगेर के प्रसिद्ध स्वामी सत्यानन्द जी ने किया। वे चित्रों का अवलोकन करते हुए।

मजलिस पार्क-दिल्ली में शिवजयन्ती के कार्यक्रम में ब्र० कु० राज प्रवचन करते हुए।

रोपड़ में शिव जयन्ति महोत्सव पर शिवध्वजारोहण के पश्चात् ब्र.कु.राज वहन, वहाँ के विशिष्ट व्यक्तियों के साथ।

सम्बलपुर में हुए शिवजयन्ति समारोह में भ्राता यू० एस० भाटिया, डी०एम० तथा कलैक्टर, सम्बलपुर, अपने विचार व्यक्त करते हुए।

शादनगर (महबूब नगर) में शिवरात्रि कार्यक्रम में अपने उद्गार प्रकट कर रहे हैं मुनसिफ़ मैजस्ट्रेट भ्राता ई० शिवकटी।

काठमाण्ठो में पशुपतिनाथ के मन्दिर में नगर पंचायत भवन के हाल में आयोजित आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन अध्यक्ष नगर पंचायत कर रहे हैं।

धरान (नेपाल) सेवाकेन्द्र की ओर से पिण्डेश्वरीय देवस्थल में प्रदर्शनी का उद्घाटन अंचलाधीश भ्राता सूर्यबहादुर सेन द्वारा सम्पन्न हुआ। ब्र० कु० शान्ता उन्हें ज्ञान के रहस्य समझाते हुए।

तान्डुर में शिवरात्रि महोत्सव कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए भ्राता टी० डी० किरिया, मुख्य महाप्रबन्धक सीमेन्ट कारपोरेशन आफ इन्डिया।

मालविया नगर-नई दिल्ली में हुए शिवजयन्ति समारोह में हि० प्र० के लोकायुक्त भ्राता टी० वी० आर० टाटाचारी अपने उद्गार प्रगट करते हुए।

५०वीं शिवजयन्ती के शुभ अवसर पर विश्व के कोने-कोने में शिवध्वज लहराया गया

भुवनेश्वर में

तिनसुकिया में

रांची में

गोहाटी में

बड़ौदा में

कटक में

हुबली में शिव जयन्ति के अवसर पर हुए कार्यक्रम में बोल रहे हैं भ्राता एम० एस० कोरवि जी।

शाहबाद (कर्नाटक) में शिवरात्रि कार्यक्रम में भ्राता एल० पी० वी० रामनमूर्ति, महाप्रबन्धक ए० सी० सी० सीमेन्ट फक्ट्री भाषण करते हुए।

मोदीनगर में शिवजयन्ती कार्यक्रम में (दाएं से) ब्र० कु० विनोद, बहन गायत्री मोदी जी, भ्राता वी० सी० राय, पुलिस अधीक्षक गाजियाबाद, भ्राता विनोद कुमार जी तथा अन्य मंच पर विराजमान हैं।

मोगा में आध्यात्मिक कार्यक्रम में वहां के एस० डी० एम० तथा ब्र० कु० अमीर चन्द जी दीप प्रज्जवलित करते हुए।

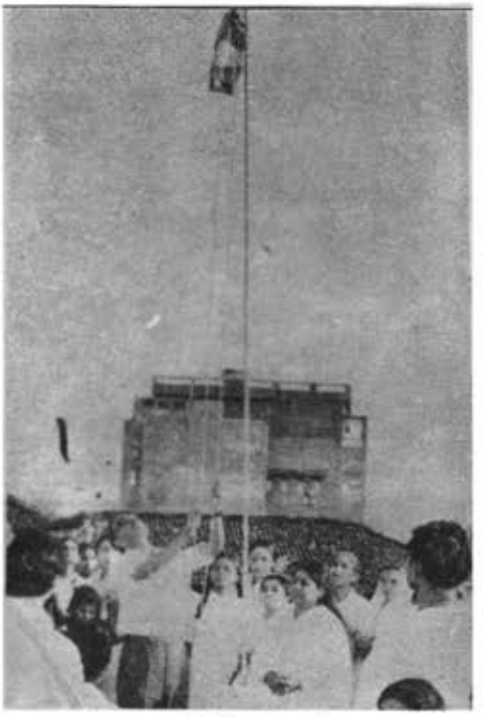

भण्डारा में शिवध्वजारोहण।

पुरी में शिव ध्वजारोहण

चन्नापटना में शिवजयन्ति समारोह में प्रवचन करती हुई ब्र० कु० परिमला बहन

आध्यात्मिक सेवा समाचार

ब्र० कु० सुन्दरलाल, शक्तिनगर, ब्र० कु० लक्ष्मण, कृष्णा नगर, देहली द्वारा संकलित

५०वीं शिव जयन्ती के अवसर पर विभिन्न सेवाकेन्द्रों द्वारा की गई ईश्वरीय सेवाओं का संक्षिप्त विवरण यहाँ उद्धृत है—

हैदराबाद—हैदराबाद सेवाकेन्द्र की ओर से एक विशाल शोभायात्रा का आयोजन किया गया जिसमें शिक्षाप्रद झाँकियाँ भी निकाली गई थीं। इस अवसर पर 'परमात्मा शिव' का वास्तविक परिचय देने हेतु आध्यात्मिक प्रदर्शिनी भी लगाई थी। सायंकाल सार्वजनिक प्रवचनों एवं चैतन्य देवियों का कार्यक्रम बड़ा ही सफल रहा। इस कार्यक्रम में विभिन्न धर्मों के नेताओं ने भाग लिया। मुख्य गुरुद्वारे के महन्त सन्त ईश्वरसिंह, दीनदार अञ्जुमन, जगतगुरु आश्रम के संचालक तथा विश्व शान्ति प्रचारक सैय्यद ईमाम मौलवी; कैथालिक चर्च के पादरी भ्राता माइकेल; जैन संघ के भूतपूर्व मंत्री, भ्राता जसराज जैन तथा आन्ध्रप्रदेश के वित्तमंत्री भ्राता महेन्द्रनाथ आदि का नाम उल्लेखनीय है। सभी ने 'परमात्मा शिव' को ही सर्व-आत्माओं का पिता बताया और कहा कि विश्व का कल्याण करने के लिये ही परमात्मा शिव का अवतरण होता है। यह सारा कार्यक्रम वहाँ के दैनिक 'हिन्दी मिलाप', 'इण्डियन एक्सप्रेस' तथा 'प्लैज' समाचारपत्रों में प्रकाशित हुआ। तथा आकाशवाणी एवं दूरदर्शन ने 'तेलुगू न्यूज' में प्रसारित किया। विविध भारती स्टेशन तथा 'ईश्वर अल्लाह प्रोग्राम' में 'शिव स्मृति' के गीत भी बजाये। इसके अतिरिक्त सदाशिव पेट, पटन्चरु, जोगीपेट, रामायण पेट, कामारेड्डी तिम्मापुर आदि ग्रामों में भी जन-जन को ईश्वरीय सन्देश देने हेतु विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

काठमाण्डु—नेपाल के प्रसिद्ध 'पशुपतिनाथ मन्दिर' के पास नगर पंचायत के हाल में त्रिदिवसीय 'मानव कल्याण आध्यात्मिक प्रदर्शनी' का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन वहाँ के अध्यक्ष भ्राता सुर्वशा वैद्य ने ५० दीपक जलाकर किया। इस प्रदर्शनी को हजारों शिव भक्तों ने देखा। नेपाल की राजमाता, महाराजा व महारानी की सवारी जब वहाँ से निकली, तो अनेक अधिकारियों व विशिष्ठ व्यक्तियों ने भी इस प्रदर्शनी को देखकर 'परमात्मा शिव', का वास्तविक परिचय प्राप्त किया। इसका संक्षिप्त समाचार 'गोरखा समाचारपत्र' में प्रकाशित हुआ। सेवाकेन्द्र पर आयोजित कार्यक्रम में रानी लक्ष्मीदेवी राणा ने ५० दीपक जलाकर 'शिवबाबा' का ध्वज फहराया और सभी ने अपनी-अपनी कमियाँ छोड़ने की प्रतिज्ञा की।

गोरखपुर—सेवाकेन्द्र के प्रांगण में 'शिवध्वजारोहण' एवं आध्यात्मिक प्रदर्शनी तथा प्रवचनों का कार्यक्रम हुआ जिसके द्वारा हजारों लोगों को ईश्वरीय सन्देश दिया गया। इसके अतिरिक्त निकटवर्ती ग्रामों में भी आध्यात्मिक प्रदर्शनी का कार्यक्रम बड़ा सफल रहा।

जगन्नाथपुरी—स्थानीय 'स्कॉउट एवं गाइड' सम्मेलन में ब्रह्माकुमारी बहनों को भी आमन्त्रित किया गया था जिसमें एक हजार स्काउटस तथा १०० टीचरस थे तथा सभी ने ब्रह्माकुमारी बहनों के प्रवचन की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

सेवाकेन्द्र पर शिवरात्री के अवसर पर वहाँ के कलेक्टर महोदय सपरिवार पधारे थे और शिवध्वजारोहण के पश्चात् काफी समय तक ज्ञान चर्चा की। वहाँ के प्रसिद्ध लोकनाथ शिव मन्दिर में 'शिव दर्शन प्रदर्शनी' भी लगाई गई थी जिसे लगभग ४० हजार लोगों ने देखा और 'परमात्मा शिव' का वास्तविक परिचय प्राप्त किया। इसके अतिरिक्त दुवाईपुर व अन्य ग्रामों में आयोजित प्रदर्शनी से भी काफी लोगों ने लाभ उठाया।

कटक—सेवाकेन्द्र के भाई-बहनों ने ग्रुप बनाकर लगभग सभी 'शिव मन्दिरों' में ईश्वरीय साहित्य तथा परमात्मा का परिचय देने वाले हजारों फोल्डर वितरित किये। सेवाकेन्द्र में शिवध्वजारोहण वहाँ के सैटलमैंट कमिश्नर भ्राता सहदेव साहु जी ने किया। तथा वहाँ के प्रसिद्ध शिव

मन्दिरों में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया जिससे हजारों लोगों ने लाभ उठाया।

अमरावती—'शिवरात्री' के अवसर पर एक 'शिव-सप्ताह' का आयोजन किया गया जिसके अन्तर्गत वहाँ के मन्दिरों में आध्यात्मिक प्रदर्शनी, प्रवचनों व झाँकियों का कार्यक्रम बड़ा ही सफल रहा। इसके अतिरिक्त आर्वी, सातरगाँव, आदर्श, लकेगाँव आदि ५० ग्रामों में ५० प्रदर्शनी एवं प्रवचनों का कार्यक्रम हुआ।

अमरेली—सेवाकेन्द्र की ओर से भाटिया शेरी तथा गुजरात हाऊसिंग सोसायटी में 'आध्यात्मिक स्लाईड शो' तथा प्रवचन का कार्यक्रम हुआ जिससे अनेकानेक लोगों ने लाभ उठाया। इसके अतिरिक्त आसपास के अनेक ग्रामों में प्रवचनों व प्रोजैक्टर शो का कार्यक्रम बड़ा सफल रहा। शिवरात्री के अवसर पर ट्रक में आकर्षण एवं शिक्षाप्रद झाँकियाँ सजाकर सारे शहर में शोभायात्रा निकाली गई तथा अनेक मन्दिरों में प्रदर्शनी व प्रवचनों का कार्यक्रम हुआ जिससे अनेकानेक आत्माओं ने परमात्मा शिव का वास्तविक परिचय प्राप्त किया।

बिलासपुर—सेवाकेन्द्र द्वारा मुंगेली तहसील में ५ दिनों के लिये 'गीताज्ञान' राजयोग आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन वहाँ के सिविल जज भ्राता एस० एन० राजपूत ने किया। हजारों लोगों ने प्रदर्शनी को देखकर 'गीता का वास्तविक रहस्य' को समझा व परमात्मा शिव का परिचय पाया। वहाँ के प्रसिद्ध 'शिव मन्दिर' में भी एक दिन के लिये प्रदर्शनी लगाई गई थी जिसे अनेकानेक शिव भक्तों ने देखा और अपने इष्टदेव का यथार्थ परिचय प्राप्त किया। छत्तीसगढ़ पूर्व माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों को सेवाकेन्द्र पर आमन्त्रित किया गया तथा उन्हें ईश्वरीय ज्ञान सुनाने के साथ-साथ 'स्लाइड शो' भी दिखाया गया।

बड़ौदा—'शिव जयन्ती के उपलक्ष में सेवाकेन्द्र पर आबू के 'विश्व शान्ति महा सम्मेलन' में भाग लेने वाले विशिष्ठ व्यक्तियों का 'स्नेह मिलन' का कार्यक्रम रखा गया। 'शिव-ध्वजारोहण' के अवसर पर सभी ने प्रतिज्ञा की कि अपने जीवन को श्रेष्ठाचारी बनाकर विश्व और भारत को श्रेष्ठ बनाने में पूरा सहयोग देंगे। इसके अतिरिक्त प्रताप नगर के राजमुक्तेश्वर महादेव मन्दिर में तथा कारेली बाग के अम्बामाता के मन्दिर में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिससे हजारों लोगों ने लाभ उठाया। वाघोडिया के शिव मन्दिर तथा पादरा ग्राम में आयोजित कार्यक्रम भी बड़ा सफल रहा।

इनका समाचार 'बडोदरा समाचार' पत्र में प्रकाशित हुआ तथा 'लोक सत्ता' व 'गुजरात समाचार' नामक समाचार पत्रों में लेख भी प्रकाशित हुए।

शिमला—सेवाकेन्द्र पर आयोजित 'शिवरात्री महोत्सव' में हिमाचल प्रदेश के राज्य कल्याण मन्त्री भ्राता पीरुराम मुख्य अतिथि के रूप में पधारे थे तथा वहां के विधायक भ्राता रत्नलाल व अन्य कई विशिष्ठ व्यक्ति भी सम्मिलित हुए। शिवध्वजारोहण के पश्चात् प्रवचनों का कार्यक्रम भी हुआ जिसका वितरण आकाशवाणी द्वारा प्रसारित हुआ।

मिरजापुर—सेवाकेन्द्र की ओर से एक सप्ताह के लिये विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। राजयोग शिविर, प्रवचन माला एवं प्रदर्शनी द्वारा अनेकानेक शिव भक्तों को परमात्मा शिव का वास्तविक परिचय मिला। वहाँ की कचहरी के प्राँगण में 'ग्राम विकास प्रदर्शनी' का उद्घाटन सिटी मजिस्ट्रेट भ्राता वी० पी० सिंह ने किया जिसे हजारों व्यक्तियों के अतिरिक्त जज, वकील व सरकारी अधिकारियों ने देखा और लाभ उठाया। इसका समाचार वहाँ के दैनिक समाचारपत्र 'जग प्रकाश' में प्रकाशित हुआ। इस अवसर पर आयोजित शोभायात्रा द्वारा भी अनेकानेक लोगों को 'परमात्मा शिव' का वास्तविक परिचय मिला। वहाँ के तालकेश्वर मन्दिर में आयोजित प्रदर्शनी, प्रवचन एवं गीत-कविताओं के कार्यक्रम से भी हजारों 'शिव भक्तों' ने लाभ उठा लिया।

अमृतसर—सेवाकेन्द्र द्वारा वहाँ के प्राचीन 'शिवालय' में 'सत्य शिव-दर्शन प्रदर्शनी' एवं शिक्षाप्रद झाँकियों का कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसका उद्घाटन वहाँ के प्रसिद्ध सर्जन डा० हरविलास राय ने किया। इस कार्यक्रम से हजारों लोगों ने लाभ उठाया। इस अवसर पर शिवालय के हाल में ब्रह्माकुमारी बहनों के प्रवचन भी हुए जिसके द्वारा परमात्मा शिव का वास्तविक परिचय हजारों शिव भक्तों ने प्राप्त किया।

गुवाहटी—में 'शिवरात्री महोत्वस' को 'विश्व शान्ति-

सप्ताह' के रूप में मनाया गया जिसमें विभिन्न वर्ग की विभिन्न प्रकार से सेवा की गई। मेघालय की राजधानी शिलोंग में शान्तियात्रा का आयोजन किया गया जिसमें तेजपुर, नलवारी, गुवाहटी, शिलोंग सेवाकेन्द्रों के भाई-बहनों ने भाग लिया। विभिन्न २२ स्थानों में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया जिससे हजारों लोगों ने लाभ उठाया। इसके अतिरिक्त अनेक स्थानों पर प्रौजेक्टर शो तथा प्रवचनों का कार्यक्रम भी किया गया। सेवाकेन्द्र पर 'शिवरात्री' के दिन 'ध्वजारोहण' का कार्यक्रम भी हुआ जिसमें कामरूप जिले के डिप्टी कमिश्नर भ्राता सी० के० दास तथा डिब्रुगढ़ के डिप्टी कमिश्नर भ्राता वीरेन हजारिका भी पधारे थे। सार्वजनिक प्रवचनों के कार्यक्रम में वहाँ के पी० डब्लु० डी० मिनिस्टर भ्राता आतुल वारो तथा एम० एल० ए० भ्राता विराम शर्मा भी पधारे थे। शहर के अनेक प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने भी कार्यक्रम में सम्मिलित होकर लाभ उठाया।

हाथरस—सेवाकेन्द्र की ओर से अनेक स्थानों पर आध्यात्मिक प्रवचनों एवं प्रदर्शनी का कार्यक्रम हुआ तथा शहर के प्रमुख भागों से शोभायात्रा निकाली गई। विश्व-विख्यात हास्य कवि काका हाथरसी तथा मामा हाथरसी ने भी शिव जयन्ती दिवस पर अपनी शुभकामनाएँ भेजीं। शिव ध्वजारोहण के कार्यक्रम में भी अनेक प्रतिष्ठित व्यक्ति पधारे। इसी प्रकार सादाबाद, चन्दपा, हतीसा, हसौना, सिकन्दराराऊ आदि ग्रामों में भी कार्यक्रम हुए जिससे अनेकानेक लोगों ने लाभ उठाया।

सीरसी—समाचार है कि वहाँ के स्वामी राघवेन्द्र जी ने 'भारतीय धर्म सम्मेलन' का आयोजन किया था जिसमें सभी धर्मों के प्रतिनिधियों के साथ ही ब्रह्माकुमारी बहनों को भी आमन्त्रित किया था। बहनों के प्रवचन से सभी महात्मा व धार्मिक लोग बहुत प्रभावित हुए और भविष्य में भी ऐसे कार्यक्रमों में भाग लेने का अनुरोध किया। लगभग १०,००० लोगों ने 'परमात्मा शिव' का यथार्थ परिचय पाकर अपने को धन्य-धन्य समझा।

अहमदाबाद—मनिनगर में स्थित सेवाकेन्द्र की ओर से २५ शिव मन्दिरों में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया तथा 'सर्व आत्माओं का पिता परमात्मा शिव' है नामक झाँकी ट्रक पर सजाकर सारे शहर में शोभायात्रा निकाली गई। इस अवसर पर शहर के प्रसिद्ध 'गीता मन्दिर' में स्वामी कमलानन्द जी के कर कमलों द्वारा 'ध्वजारोहण' को कार्यक्रम हुआ। शहर के अनेक प्रतिष्ठित व्यक्तियों को 'शिव जयन्ती' का सन्देश 'गोल्डन कार्डस' पर छपवा कर दिया। इसके अतिरिक्त प्रवचनों, राजयोग शिविर, ज्ञान गोष्ठी, संगीत गोष्ठी आदि कार्यक्रम भी बहुत सफल रहे।

बोकारो स्टील सीटी—सेवाकेन्द्र के प्राँगण में बोकारो स्टील प्लान्ट जनरल मैनेजर भ्राता एस० पाण्डे ने शिव बाबा का ध्वजारोहण किया। शहर के प्रमुख केन्द्र सैक्टर छः में त्रिदिवसीय 'शिव दर्शन प्रदर्शनी' का भी आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन वहाँ के एस० डी० ओ० भ्राता शरद कुमार ने किया। मुख्य अतिथि के रूप में चास-बोकारो चैम्बर ऑफ कामर्स के प्रेजिडैन्ट भ्राता बिमल पारीख ने भाग लिया। अनेकानेक आत्माओं ने इस प्रदर्शनी को देखकर 'परमात्मा शिव' का यथार्थ परिचय प्राप्त किया। प्रदर्शनी में बंगाल सरकार की सेवा में लगे भ्राता मोहन लाल गुप्ता, डिप्टी डायरेक्टर वाटर-ट्रांसपोर्ट बंगाल तथा एस० डी० एम० बोकारो भी सपरिवार पधारे थे।

इसके अतिरिक्त चास में शहर के बीच एक विशाल पण्डाल में 'चरित्र निर्माण प्रदर्शनी' का भी आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन चैम्बर आफ कोमर्स के प्रधान भ्राता विमल पारीख ने किया। अनेक व्यापारियों तथा शहर के प्रमुख लोगों ने इससे लाभ उठाया।

भुवनेश्वर—सेवाकेन्द्र के प्रांगण में 'शिव ध्वजारोहण' किया गया जिसमें अनेक प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने भाग लिया। शहर के प्रसिद्ध राम मन्दिर तथा शिव मन्दिर में 'शिव दर्शन प्रदर्शनी' का आयोजन भी किया गया जिससे मन्दिर के ट्रस्टी, मैनेजर, सैक्रटरी के अतिरिक्त हजारों भक्तों ने लाभ उठाया। इसका समाचार व लेख उड़िया भाषा में प्रकाशित होने वाले अनेक समाचारपत्रों में प्रकाशित हुआ।

गोंदिया—सेवाकेन्द्र पर योग भट्ठी व ध्वजारोहण का कार्यक्रम हुआ तथा वहाँ के निकटवर्ती भानपूर ग्राम के 'शिव मन्दिर' में 'शिव दर्शन प्रदर्शनी' का आयोजन किया गया जिससे हजारों लोगों ने लाभ उठाया। इसके अतिरिक्त लाटी गीता पाठशाला द्वारा भी प्रदर्शनी लगाई गई तथा

अनेकानेक आत्माओं को सन्देश दिया गया इनका समाचार स्थानीय समाचारपत्रों में प्रकाशित हुआ।

कानपुर (नयागंज)—कानपुर रेलवे स्टेशन के समीप जी० आर० पी० कालोनी के शिव मन्दिर में 'विश्व नव-निर्माण प्रदर्शनी' का आयोजन किया गया जिसका उद्-घाटन वहाँ के वरिष्ठ अधीक्षक ने किया। प्रवचनों व प्रोजैक्टर शो द्वारा भी हजारों लोगों को ईश्वरीय सन्देश दिया गया। इसके अतिरिक्त फतेहपुर, गोला गोकर्णनाथ (खीरी) आदि स्थानों पर स्थित गीता पाठशालाओं द्वारा भी शिव जयन्ती महोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया।

जालन्धर—सीटी तथा कैन्टोमेंट एरिया में दो दिन प्रभात फेरी निकाली गई तथा सार्वजनिक प्रवचनों द्वारा अनेकानेक आत्माओं को परमात्मा शिव का सन्देश दिया गया। वहाँ के स्थानीय समाचारपत्र 'हिन्द समाचार' में शिव बाबा की जीवन कहानी तथा शिवरात्री के उपलक्ष में लेख भी प्रकाशित हुआ।

भण्डारा—सेवाकेन्द्र की ओर से 'नगर परिषद टाउन हाल' में सार्वजनिक प्रवचनों का कार्यक्रम हुआ जिसमें अनेक प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने भाग लिया। शिव ध्वजारोहण वहाँ के जिला पशु संवधर्न अधिकारी ने किया तथा समाज सेविका बहन शालिनी ताई देशकर ने शिवबाबा के चित्र का अनावरण किया। इसके अतिरिक्त पवनी के प्राथमिक विद्यालय में आयोजित कार्यक्रम से भी अनेकानेक शिक्षकों एवं विद्यार्थियों ने लाभ उठाया।

मुजफ्फरपुर—सेवाकेन्द्र पर शिव ध्वजारोहण वहां के प्रसिद्ध कवि जानकी वल्लभ शास्त्री ने किया तथा कबीर मठ के ग्रंथी एवं राममनोहर लोहिया महाविद्यालय के प्रधानाचार्य ने भाग लिया। शहर के प्रमुख भागों में विशाल शोभायात्रा भी निकाली गई। सार्वजनिक प्रवचनों का कार्यक्रम भी हुआ जिसमें अनेकानेक प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने लाभ उठाया।

रांची—शिव जयन्ती महोत्सव, अत्यन्त उमंग और उत्साह से सम्पन्न हुआ। इस पुनीत अवसर पर ज्योति-पिता का ध्वजारोहण ईश्वरीय स्मृति और 'शिव का झण्डा उच्च महान्'—इस आध्यात्मिक गीत की पवित्र तरंगों के मध्य रांची विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति डा० रामदयाल मुण्डा के कर-कमलों के द्वारा किया गया। शिव-जयन्ती की महिमा एवं आध्यात्मिक रहस्य का प्रवचन ब्र० कु० निर्मला बहन ने किया। माननीय कुलपति श्री मुण्डा जी ने अपना अनुभव प्रकट करते हुए कहा कि साम्प्रतिक व्यस्त और तनावग्रस्त जीवन के विपरीत, यहां आधे घण्टे के स्वल्प समय में मैंने अतुल्य शान्ति और पवित्रता का अनुभव किया। उन्होंने इस पुनीत दिवस पर एक-एक कर बुराइयों के परित्याग तथा सद्गुण ग्रहण का शुभ संकल्प लेते हुए इस ईश्वरीय कार्य के प्रति श्रद्धाभावना और यथाशक्ति सहयोगी बनने की इच्छा भी व्यक्त की। केन्द्रीय कारागार के अधीक्षक भ्राता दशरथ जी ने, जोकि विश्वविद्यालय से पूर्व परिचित थे, अपना अनुभव सुनाते हुए कहा कि अपने तनावकारी कार्य के बावजूद, मुझे एक गहन शान्ति की अनुभूति राजयोग के माध्यम से होती है। ब्र० कु० शीला बहन ने मान्य अतिथि से चिर सम्पर्क, सम्बन्ध और सहयोग की अपेक्षा व्यक्त की। भ्राता श्री रामदयाल मुण्डा जी को ईश्वरीय भेंट के रूप में श्री लक्ष्मी-नारायण का आकर्षक चित्र और आध्यात्मिक साहित्य प्रदान किया गया। कार्य-क्रम का समापन ईश्वरीय स्मृति में भ्राता श्री रामस्वरूप मोदी जी के धन्यवाद ज्ञापन से हुआ।

विश्वविद्यालय की स्थानीय शाखा की ओर से रात्रि में 'ब्रह्मा का दिन' स्लाइड्स प्रदर्शित किये गये। शिव-जयन्ती के इस समारोह का समाचार कार्यक्रम के पूर्व तथा पश्चात् स्थानीय समाचारपत्रों में प्रकाशित हुआ एवं आकाशवाणी के रांची केन्द्र के द्वारा भी इसका प्रसारण हुआ। रांची पहाड़ी के शिव-मन्दिर के निकट ईश्वरीय सेवार्थ शाखा के द्वारा प्रदर्शिनी भी आयोजित की गयी। तथा इसके पूर्व सतीघाट मेले (सिल्ली) में भी प्रदर्शिनी का आयोजन किया गया था जिसके द्वारा ७ हजारों आत्माओं को ईश्वरीय सन्देश मिला।

(पृष्ठ ३२ का शेष १४ एवं १८ पर)

जगदीश चन्द्र हसीजा, मुख्य सम्पादक, ब्र० कु० आत्म प्रकाश, सम्पादक, बी ९/१९ कृष्णानगर, दिल्ली द्वारा सम्पादन तथा ग्रन्थ भारती, शादहरा, दिल्ली-३२ से छपवाया, Regd. No 10563/65-D, (E)—70